भारतीय ज्ञानपरम्परा आधारित

संस्कृति बोधमाला ४

प्रकाशक : विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान, कुरुक्षेत्र

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान
हमारा लक्ष्य
इस प्रकार की राष्ट्रीय शिक्षा-प्रणाली का विकास करना है जिसके द्वारा ऐसी युवा-पीढ़ी का निर्माण हो सके जो हिन्दुत्वनिष्ठ एवं राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत हो, शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्ण विकसित हो तथा जो जीवन की वर्तमान चुनौतियों का सामना सफलतापूर्वक कर सके और उसका जीवन ग्रामों वनों, गिरिकन्दराओं एवं झुग्गी-झोपड़ियों में निवास करने वाले दीन-दुःखी अभावग्रस्त अपने बान्धवों को सामाजिक कुरीतियों, शोषण एवं अन्याय से मुक्त कराकर राष्ट्र जीवन को समरस, सुसम्पन्न एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए समर्पित हो।

ॐ

मंगलाचरण

मात–पिता की आज्ञा मानें, सबको मित्र बनाना जानें।
सब सुख–दुख में आते काम, सभी पुकारें जय श्रीराम।।

राष्ट्र गीत - वन्दे मातरम्

प्रस्तुत राष्ट्रगीत भारत के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय (चटर्जी) द्वारा रचित 'आनंदमठ' पुस्तक से उद्धृत है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय यही गीत क्रांतिकारियों का प्रेरणा मंत्र रहा है।

वन्दे मातरम्।
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्,
शस्य श्यामलां मातरम्। वन्दे मातरम् ॥१॥
शुभ्र-ज्योत्स्नां-पुलकित-यामिनीम्,
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्,
सुहासिनीं, सुमधुर-भाषिणीम्,
सुखदां, वरदां, मातरम्। वन्दे मातरम् ॥२॥
कोटि-कोटि-कंठ कल-कल-निनाद-कराले,
कोटि-कोटि-भुजैर्धृत-खर-करवाले,
अबला केनो माँ एतो बले,
बहुबल-धारिणीं, नमामि तारिणीम्,
रिपुदल-वारिणीं मातरम्। वन्दे मातरम् ॥३॥
तुमि विद्या तुमि धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म,
त्वं हि प्राणाः शरीरे, बाहुते तुमि मा शक्ति,
हृदये तुमि मा भक्ति,
तोमारई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे। वन्दे मातरम् ॥४॥
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरण-धारिणीम्,
कमला कमल-दल-विहारिणीम्,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्
नमामि कमलां अमलां अतुलाम्,
सुजलां सुफलां, मातरम्। वन्दे मातरम् ॥५॥
श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्,
धरणीं भरिणीं मातरम्। वन्दे मातरम् ॥६॥

भारत माता की जय।

प्रकाशकीय

परमोच्च सत्य का सन्धान, आख्यान और व्यवहार संस्कृति है। आसेतुहिमाचल, इस भूमि पर अपनी सारस्वत साधना से इस सत्य का साक्षात् दर्शन कर हमारे पूर्वज मनीषियों ने ऋषि पद प्राप्त किया। वेद एवं उपनिषद् आदि वाङ्मय के रूप में उन्होंने इसकी अभिव्यक्ति की। इस पृथ्वीतल एवं समस्त ब्रह्माण्ड की प्राकृतिक शक्तियों की देवरूप में मनोरम स्तुति तथा जीवन के गूढ़ रहस्यों का, विविध आख्यान-उपाख्यानों के माध्यम से, तात्त्विक कथन आदि ने इसके स्वरूप को गढ़ा। इनके आधार पर जिन जीवनमूल्यों (दर्शन), जीवन व्यवहार (धर्म) का विकास हुआ उसे भारतीय संस्कृति के नाम से अभिहित किया गया। 'सत्य संकल्प प्रभु' राम, गीता के आख्याता श्रीकृष्ण एवं कण-कण में रमे शिवशंकर 'संस्कृति पुरुष' बने।

सत्य शाश्वत है, कालजयी है, इसलिए उसका प्रवाह चिरन्तन होता है। सत्य को वहन करने वाली संस्कृति की गति कभी मृदु, मंद, मंथर उर्मियों से युक्त होती है तो आवश्यकता होने पर इसमें उत्ताल तरंगें भी उठती हैं। भगवान् महावीर और भगवान् बुद्ध ने इसे विविधावर्णी बनाया। श्रीमद् शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य प्रभृत्ति तत्त्ववेत्ताओं के दार्शनिक सूत्रों के साथ उस तत्त्व के रसरूप (रसो वै सः) के प्रति भक्तिपरक स्तोत्रों ने इसमें माधुर्य का संयोग किया। पुराण साहित्य तो भक्ति का अगाध समुद्र ही है। ब्रह्मसूत्र, उपनिषद् एवं श्रीमद्भगवद्गीता- इस प्रस्थानत्रयी में श्रीमद्भागवत जुड़कर प्रस्थान चतुष्टय हुआ, जिसने मस्तिक और हृदय-तत्त्वचिन्तन और भक्ति की समन्वित धारा को गति प्रदान की। पूरे इतिहास फलक पर दृष्टिपात करें तो पाएँगे कि लम्बे संघर्षकाल में- प्रारंभ से अन्त तक- इन्हीं ग्रन्थों में ग्रथित तत्त्वदर्शन का युगीन, समकालीन व्याख्यान हमें प्रेरणा देता रहा है।

देवताओं के लिए भी स्पृहणीय भारतभूमि, राष्ट्र का भारतमाता के रूप में चिरंतन दर्शन एक ओर, तो दूसरी ओर 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' कहकर सम्पूर्ण जगती के प्रति अनन्य श्रद्धाभाव, भारतीय संस्कृति का मूल है। 'न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्' (महाभारत), 'सबार ऊपर मानुष सत्य, ता ऊपर किछु नाहीं (चण्डीदास) कहकर मनुष्य मात्र को इस संस्कृति ने अपने केन्द्र में रखा तो जीवमात्र और उससे भी आगे बढ़कर चेतन के साथ जड़ को भी जोड़कर यह संस्कृति अनन्त विस्तार पाती है। छोटे से छोटा (अणोरणीयान्) और बड़े से बड़ा (महतो महीयान्), सब कुछ को यह अपनी परिधि में समाहित कर लेती है। आध्यात्मिकता, सांसारिकता, शाश्वत धर्म, सामयिक कर्त्तव्य, सुरज्ञान, कर्म, भक्ति का समन्वय, पुरुषार्थ चतुष्टय, व्यवहार के स्तर पर आन्तरिक शुचिता और बाह्यशुद्धि आदि विचार इसकी श्रेष्ठता है। इस सबका आख्यान करने वाले रामायण, महाभारत हमारे 'संस्कृति ग्रन्थ' हैं।

संस्कृति का यह प्रवाह अबाध व निरन्तर बना रहे, इसकी आवश्यकता आज बड़ी तीव्रता से अनुभव में आती है। यह नई पीढ़ी तक पहुँचे, नई पीढ़ी को इसका सम्यक, सुष्ठु और सर्वाङ्ग बोध हो, इस उद्देश्य से विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान इस संस्कृति बोधमाला का प्रकाशन कर रहा है। भावीपीढ़ी 'संस्कृति दूत' बनकर मानवता की सेवा कर सकें, दिशा दे सकें तो हम कृतकार्य होंगे।

संस्कृति बोधमाला को तैयार करने के लिए विद्या भारती के अनेक कार्यकर्ताओं ने सब प्रकार का अनवरत परिश्रम किया है, उनके प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। इसमें उपयोग किए गए चित्रों के रचनाकार निश्चय ही हमारे धन्यवाद के पात्र हैं। जिन महानुभावों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी भी रूप में इसमें सहयोग मिला, उनका विनम्र आभार...

– प्रकाशक

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
१.	**हमारी भारतमाता** चारधाम, हमारी पवित्र नदियाँ, पावन सरिताएँ, हमारे पर्वत।	५
२.	**हमारा भारत राष्ट्र** हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व है, भारत के प्राचीन नाम, एकात्मतास्तोत्रम्, भारत का भौगालिक स्वरूप, महान राष्ट्रभक्त आचार्य विष्णु गुप्त चाणक्य।	११
३.	**हमारी भारतीय संस्कृति** भारतीय संस्कृति की चिरंजीविता, संस्कार, यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:, हमारी मान्यताओं के वैज्ञानिक आधार, सांस्कृतिक पर्व/त्योहार, सदाचार, गुरुभक्त बालक, आदर्श विद्यार्थी के गुण।	१५
४.	**हमारी परिवार व्यवस्था** आहार-विहार, सद्‌गुणों का विकास, सुभाषित, सन्तवाणी, गीत, एक चुनौती : स्वदेशी के लिए, भारतीय भाषाएँ।	२०
५.	**हमारी ज्ञान परम्परा** भारतीय जीवन दृष्टि व जीवन शैली, हमारा प्राचीन वांग्मय, श्रीरामचरितमानस प्रसंग, श्रीमद्‌भगवद्‌गीता, भारतीय योग, व्यक्तिगत जीवन में संकल्प।	२७
६.	**हमारी वैज्ञानिक परम्परा** विज्ञान, भारतीय कालगणना, संगीत की भारतीय परम्परा, १८ विद्याएँ और ६४ कलाएँ, स्थापत्यकला, आयुर्वेद।	३३
७.	**हमारा गौरवशाली अतीत** प्राचीन भारत के महान सम्राट, गौरवशाली भारत, वन्देमातरम् की गौरव गाथा, हम पर थोपे गये युद्ध, हमारे बालवीर।	३७

---

१. हमारी भारतमाता

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।

भारतमाता

भारत, मन में बसने वाला एक भाव है। इसकी महानता के कारण भारत में रहने वाले प्रत्येक भारतवासी को अपने-आप को भारतीय कहलाने पर गर्व का अनुभव होता है। इसकी महानता के बारे में जितना कहा जाए, कम है। भारतभूमि का वातावरण मनुष्य को जीने का उत्तम अवसर ही नहीं देता, बल्कि उसे सुन्दर सोच से सम्पन्न भी करता है। भारत-भूमि हमारी मातृभूमि एवं पुण्यभूमि है। इसका कण-कण पवित्र है। इस भूमि के पग-पग पर उत्सर्ग और शौर्य का इतिहास अंकित है। यह केवल कँकड़ पत्थर नहीं, चेतनामयी है, आदिशक्ति जगज्जननी का स्वरूप है। इसलिए हम सब उसकी आराधना करते हैं। यह भूमि हमारी माँ है और हम इसकी सन्तानें हैं, यह भाव हमें सनातन काल से प्राप्त हुआ है। भारत भूमि का वर्णन वाणी व लेखनी द्वारा असम्भव है फिर भी पुत्र होने के नाते हमें इसके भव्य-दिव्य स्वरूप का अधिकाधिक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। मातृभूमि के पुजारी गाते हैं-

कण-कण चन्दन जैसा पावन पग-पग तीरथधाम है।
ऐसी अनुपम पुण्यधरा को बारम्बार प्रणाम है।।

चार धाम, चार मठ, चार कुम्भ स्थल, सप्त पुरियाँ, द्वादश ज्योतिर्लिंग, इक्यावन शक्तिपीठ, पंच सरोवर, पवित्र नदियाँ, पर्वत, विभिन्न आस्था के केन्द्र सम्पूर्ण भारतीय समाज के लिए श्रद्धास्पद हैं एवं भारत की राष्ट्रीय एकता के प्रतीक हैं। आइए, भारतमाता के स्वरूप के विषय में थोड़ा और जानने का प्रयास करें-

चार धाम

बदरी जगन द्वारका रामेश जिसके धाम।
भरत भू महान है, महान है महान।।

बदरीनाथ जगन्नाथपुरी द्वारकापुरी रामेश्वरम्

भारत की चारों दिशाओं में स्थित ये चारों धाम सनातन काल से राष्ट्र की सांस्कृतिक एकात्मता के प्रतीक हैं। चार धाम यात्रा हर हिन्दू के मन की अभिलाषा रहती है। ये धाम हैं –

(१) **बदरीनाथ धाम** – भारत की उत्तर दिशा में उत्तराखण्ड राज्य में, चमोली जनपद में, अलकनन्दा नदी के तट पर स्थित है। इस मन्दिर में मुख्य रूप से बदरीनारायण (भगवान विष्णु) की प्रतिमा स्थापित है।

(२) **जगन्नाथ धाम** – भारत की पूर्व दिशा में, ओडिशा राज्य के जगन्नाथपुरी में भगवान जगन्नाथ (श्रीकृष्ण), बलभद्र और उनकी बहिन सुभद्रा की काष्ठ प्रतिमाएँ स्थापित हैं।

(३) **द्वारकाधाम** – भारत की पश्चिम दिशा में, गुजरात राज्य के द्वारका जिले में यह धाम स्थित है। यहाँ भगवान श्रीकृष्ण (द्वारकाधीश) की प्रतिमा स्थापित है।

(४) **रामेश्वरम् धाम** – भारत की दक्षिण दिशा में तमिलनाडु राज्य के रामनाथपुरम् जिले में स्थित है। यहाँ भगवान श्रीराम द्वारा स्थापित रामेश्वरम् शिवलिंग द्वादश ज्योतिर्लिंगों में एक है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर जानिए –

प्रश्न जगन्नाथ धाम में किन भाई-बहिनों की प्रतिमा स्थापित है?

उत्तर भगवान जगन्नाथ (श्रीकृष्ण), बलभद्र और उनकी बहन सुभद्रा।

प्रश्न रामेश्वरम् धाम तमिलनाडु के किस जिले में स्थित है?

उत्तर रामनाथपुरम्।

प्रश्न रामायण में वर्णित रामसेतु किस धाम में पूजा के बाद राम जी की सेना ने बनाना प्रारम्भ किया था?

उत्तर रामेश्वरम्।

प्रश्न बदरीनाथ धाम किस नदी के तट पर स्थित है?

उत्तर अलकनन्दा।

एक प्रयोग कीजिए

मानचित्र पर चित्र खींचिए पावन धर्मस्थान के।
दर्शन होंगे दिशा-दिशा में भारतवर्ष महान के।।

भारतवर्ष का मानचित्र लेकर उसमें अपने मानबिन्दुओं–चारधाम, चार कुम्भस्थल, पवित्र तीर्थस्थान, सप्तपुरियाँ, बारह ज्योतिर्लिंग, सारे शक्तिपीठ आदि चिन्हित करते जाइए। आप देखेंगे कि अपने इस महान राष्ट्र की कोई दिशा, कोई प्रान्त ऐसा नहीं है जहाँ कोई पावन तीर्थ या सांस्कृतिक मानबिन्दु न हो। इसीलिए तो यह पुण्यधरा देवभूमि कहलाती है।

अपने देश की वर्तमान सीमाएँ

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

१. उत्तर में गगनचुम्बी ---------- पर्वत है। **(हिमालय)**

२. दक्षिण में ---------- इसके चरण पखारता है। **(हिन्दु महासागर)**

३. दक्षिण-पूर्व में ---------- एवं दक्षिण-पश्चिम में -------- है। **(गंगासागर , सिन्धुसागर)**

४. पूर्व में ---------- है। **(ब्रह्मदेश या म्यांमार)**

५. उत्तर-पश्चिम में -------- एवं ---------- देश हैं। **(पाकिस्तान, अफगानिस्तान)**

६. अफगानिस्तान, बर्मा, तिब्बत के प्राचीन नाम।

१---------- २---------- ३---------- हैं।

(उपगणस्थान, ब्रह्मदेश, त्रिविष्टप)

हमारी पवित्र नदियाँ

नदियाँ माँ हैं युगों-युगों से, जीवन नीर पिलाती हैं।
संस्कृति के कलगान सुनाती, ये इतिहास बताती हैं।
सहती हैं उत्थान-पतन सब, आगे बढ़ती रहती हैं।
बढ़ते रहना ही जीवन है, सीख सभी से कहती हैं।

भारत में नदियों को माँ का स्थान दिया गया है। अनेक सभ्यताएँ इन नदियों के तट पर पल्लवित-पुष्पित हुई हैं। पुरातात्त्विक उत्खनन इसके प्रमाण हैं।

ऋग्वेद (विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ) सहित अधिकांश वैदिक साहित्य सरस्वती नदी के किनारे रचा गया था। सनातन संस्कृति में सप्त सरस्वती की चर्चा है और उन पर अगाध श्रद्धा है। इनके जल में सकारात्मक ऊर्जा प्रवाहित होती है। सनातन काल से नदियाँ जल की प्रमुख स्रोत हैं। जनसामान्य इन नदियों में आचमन, स्पर्श एवं स्नान या स्मरण करके भी पुण्य प्राप्त करता है। अतः ये पुण्यसलिला कही जाती हैं। हमें इन नदियों के जल को निर्मल बनाए रखने का प्रयत्न करते रहना चाहिए।

ऋषि भगीरथ द्वारा गंगा का पृथ्वी पर अवतरण

भारत की प्रमुख नदियाँ –

१. **गंगा –** गंगा भारत की पवित्रतम नदी है। उत्तर भारत की जीवन रेखा है। उत्तराखण्ड में हिमालय के गोमुख से लेकर गंगासागर (बंगाल की खाड़ी) तक इसकी लम्बाई लगभग २,५१० कि.मी. है। पौराणिक मान्यता के अनुसार राजा भगीरथ ने कठोर तपस्या से गंगा को पृथ्वी पर अवतीर्ण कराया। इसी कारण गंगा को भागीरथी भी कहते हैं। अनेक प्रमुख तीर्थ एवं प्रमुख नगर गंगा के किनारे बसे हैं। गंगाजल को वैज्ञानिक दृष्टि से सर्वाधिक शुद्ध एवं आध्यात्मिक दृष्टि से पवित्र माना गया है। हमारे धार्मिक अनुष्ठान गंगाजल के बिना पूर्ण नहीं होते। हिमालय की दुर्लभ वनस्पतियों एवं खनिज तत्त्वों के इस जल में समाविष्ट होने के कारण इसका जल कभी भी प्रदूषित नहीं होता।

२. **यमुना –** यमुना नदी यमुनोत्री उत्तरकाशी से निकली है। इसे कालिन्दी एवं सूर्यपुत्री भी कहा जाता है। यह ब्रज संस्कृति का आधार है। श्रीकृष्ण ने यमुना किनारे वृन्दावन में ही अपनी लीलाओं का दर्शन कराया है। श्रीकृष्ण ने यमुना में कालियमर्दन एवं उसके तट पर गौचारण आदि लीलाएं कीं। देश की राजधानी नई दिल्ली भी यमुना के किनारे स्थित है। गंगा-यमुना का मैदानी भाग विश्व का सर्वाधिक उपजाऊ क्षेत्र है।

३. **सरस्वती –** सरस्वती नदी को हमारी संस्कृति का स्रोत माना गया है। वैदिक साहित्य में इसकी व्यापक चर्चा है। वैदिक साहित्य में इसे अन्नवती (भरपूर अन्नोत्पादक क्षेत्र) तथा उदकवती (भरपूर जल राशि युक्त क्षेत्र), अम्बितमे, देवीतमे, नदीतमे कहा गया है (ऋग्वेद २.४१.१६)। वैदिक ऋचाओं का संग्रह इसी नदी के किनारे सम्पन्न हुआ है। वर्तमान में यह अन्त:सलिला (अदृश्य) हो गई है किन्तु नासा अनुसन्धान केन्द्र के द्वारा लिए गए चित्र में स्पष्ट दिख रहा है कि भूमि के गर्भ में यह आज भी बह रही है। मूल रूप से सरस्वती का क्षेत्र हरियाणा और उसका समीपवर्ती क्षेत्र है। भारत की प्राचीनतम सभ्यता सरस्वती के किनारे विकसित हुई थी और बाद में सिन्धु तक फैल गयी। वर्तमान युग में सरस्वती नदी के भूमिगत प्रवाह-पथ के अन्वेषण में आधुनिक पुरातत्त्वविद् डॉ॰ विष्णु श्रीधर वाकणकर जी का बड़ा योगदान है। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में इन तीनों नदियों का संगम होने से ही वह समस्त तीर्थों का राजा अर्थात् 'तीर्थराज प्रयाग' कहलाता है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर जानिए -

प्रश्न विश्व का अधिकांश वैदिक साहित्य किस नदी के तटपर रचा गया?

उत्तर सरस्वती नदी।

प्रश्न गंगा नदी को धरती पर लाने वाले तपस्वी राजा का नाम बताइये?

उत्तर भगीरथ।

प्रश्न भगवान् श्रीकृष्ण की कालियमर्दन की लीला किस नदी से सम्बन्धित है?

उत्तर यमुना नदी।

प्रश्न कौन-सी नदी वर्तमान में भूमि के अन्दर ही अन्दर बह रही है?

उत्तर सरस्वती नदी।

प्रश्न- कौन-सी नदी का जल कभी प्रदूषित नहीं होता?

उत्तर- गंगा नदी।

प्रश्न- भारत की राजधानी किस नदी के किनारे स्थित है?

उत्तर- यमुना नदी।

प्रश्न- कौन-सी नदी उदकवती और अन्नवती नामों से जानी जाती है?

उत्तर- सरस्वती नदी।

कालियमर्दन

प्रश्न- वर्तमान युग में लुप्त सरस्वती नदी की खोज किस महापुरुष ने की?

उत्तर- डॉ॰ विष्णु श्रीधर वाकणकर।

प्रश्न रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(१) गंगा नदी का उद्‌गम स्थल ------- है। **(गोमुख)**

(२) उत्तरभारत की जीवन रेखा ------- नदी कहलाती है। **(गंगा)**

(३) -------- नदी सूर्यपुत्री भी कही जाती है। **(यमुना)**

(४) उत्तरकाशी के ---- नामक स्थान से यमुना नदी निकलती है। **(यमुनोत्री)**

(५) वैदिक ऋचाओं का संग्रह ---------- नदी के किनारे सम्पन्न हुआ। **(सरस्वती)**

(६) अम्बितमे, नदीतमे, देवीतमे ---------- का वाक्य है। **(ऋग्वेद)**

(७) ब्रज संस्कृति का आधार --------- नदी है। **(यमुना)**

(८) हमारा धार्मिक अनुष्ठान ------- के बिना पूर्ण नहीं होता। **(गंगाजल)**

(९) विश्व का सर्वाधिक उपजाऊ क्षेत्र --- है। **(गंगा-यमुना का मैदानी भाग)**

प्रश्न उपयुक्त जोड़ी बनाइए -

(१)	माया	- (१)	तमिलनाडु
(२)	काञ्चीपुरम	- (२)	मथुरा
(३)	श्रीकृष्ण जन्मस्थली	- (३)	अयोध्या
(४)	सरयू नदी	- (४)	गुजरात
(५)	द्वारका	- (५)	हरिद्वार

(उत्तर : १-५, २-१, ३-२, ४-३, ५-४)

पावन सरिताएँ

जिन नदियों की धाराओं से भारत माँ स्नान है करती।
युग-युग से जनता जीवनरस भरा जलामृत पान है करती।
धर्म संस्कृति, संस्कारों के मेले जिनके तट पर भरते हैं,
पुण्यकोष भरती नदियाँ भू सींच-सींच धन-धान्य हैं भरती॥

आइए, ऐसी कुछ और पावन सरिताओं का परिचय इस प्रश्नोत्तरी से प्राप्त करें –

१. विश्व में सबसे विशाल एवं सबसे सघन बसा हुआ नदियों का मैदान कौन-सा है?

(गंगा-यमुना का मैदान)

२. उत्तर भारत की छः पवित्र नदियों के नाम बताइये। **(गंगा, यमुना, सिन्धु, सरस्वती, गोमती, सरयू)**

३. दक्षिण भारत की छः पवित्र नदियों के नाम बताइये।

(महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, तुंगभद्रा, ताम्रपर्णी)

४. किस सूर्यवंशी राजा के प्रयासों से भारत-भूमि पर गंगा अवतरित हुई? **(भगीरथ)**

५. नारायण भगवान ने गंगोत्री से पवित्र जल लाकर किस कुण्ड का निर्माण किया?
(नारायण कुण्ड, गुजरात)

६. नर्मदा नदी का उद्‌गम-स्थान कहाँ है? **(अमरकण्टक, मध्य प्रदेश)**

हमारे पर्वत

संस्कृति के, इतिहासों के हैं, अचल साक्ष्य और रक्षक पर्वत।
सरिताओं के जनक यही, सीमाओं के आरक्षक पर्वत॥

आइए, हम पवित्र पर्वतों के विषय में जानें–

१. अबुर्दाचल किस पर्वत का संस्कृत नाम है? **(अरावली)**

२. चन्दन के सघन वन वाले पर्वत का क्या नाम है? **(मलय पर्वत)**

३. बदरीनाथ धाम में किन पाँच शिलाओं को स्थापित किया गया है?
(नारदशिला, मार्कण्डेयशिला, नृसिंहशिला, वराहशिला, गरुड़शिला)

४. नीलगिरि पर्वत ---------- प्रदेश में है। **(कर्नाटक)**

५. सतपुड़ा की पहाड़ियाँ -------- की शोभा बढ़ा रही हैं। **(मध्य प्रदेश)**

६. भारत के मध्य में ---------- पर्वत है। **(विन्ध्याचल)**

७. हिमालय पर्वत की सबसे ऊँची चोटी का नाम ---------- है। **(सागरमाथा (एवरेस्ट)**

८. नर्मदा, सोनभद्र आदि पवित्र नदियाँ ------- पर्वत शिखर से निकलती हैं। **(अमरकण्टक)**

निम्नलिखित स्थान कहाँ स्थित हैं?

(क) वैष्णो देवी **(जम्मू-कश्मीर)**

(ख) वैशाली **(बिहार)**

(ग) तक्षशिला **(पाकिस्तान)**

(घ) कुम्भानगर **(अफगानिस्तान)**

(ङ) पंजासाहिब **(पाकिस्तान)**

(च) लवपुर (लाहौर) **(पाकिस्तान)**

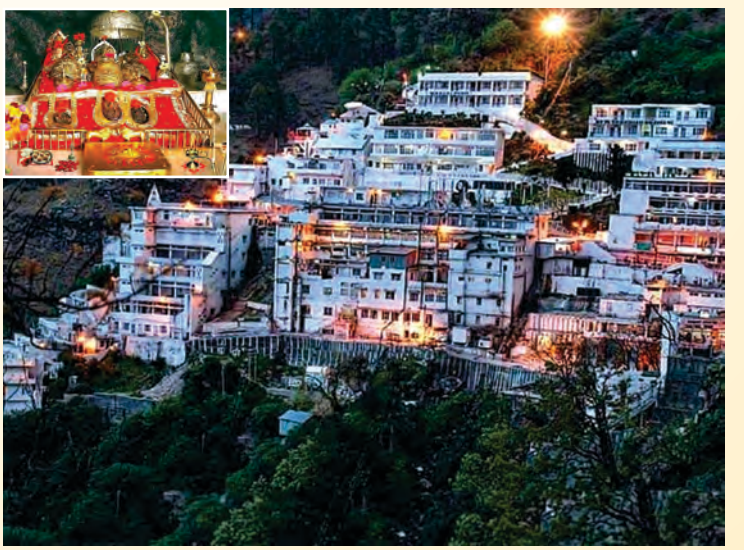

माता वैष्णो देवी (जम्मू-कश्मीर)

२. हमारा भारत राष्ट्र

हिन्दवः सोदराः सर्वे, न हिन्दू पतितो भवेत्।
मम दीक्षा हिन्दुरक्षा, मम मंत्र समानता॥

हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व है

वर्तमान भारत के अधिकांश लोग जो हिन्दुत्व से अनभिज्ञ हैं, वे हिन्दुत्व का अर्थ साम्प्रदायिकता और हिन्दू का अर्थ साम्प्रदायिक समझते हैं। वास्तव में हिन्दुत्व और साम्प्रदायिकता में उतना ही अन्तर है, जितना आकाश और पाताल में।

हिन्दू कौन है? इसे भिन्न-भिन्न प्रकार से समझाया गया है, परन्तु सबसे विशद्, प्रामाणिक व सरल परिभाषा इस श्लोक में दी गई है –

आसिन्धोः सिन्धुपर्यन्ता यस्य भारतभूमिका।
पितृभूः पुण्यभूश्चैव सवै हिन्दुरिति स्मृतः॥

अर्थात् जो इस सिन्धु नद से लेकर सागर (कन्याकुमारी) पर्यन्त विस्तृत इस भारत-भूमि को अपनी पितृभूमि और पुण्यभूमि मानता है, वही हिन्दू है।

हिन्दू की यह परिभाषा असाम्प्रदायिक है। हिन्दू वह है जो भारतभूमि को अपनी पितृभूमि व पुण्यभूमि मानता है। इसमें साम्प्रदायिकता नहीं राष्ट्रीयता है, इसमें देशभक्ति है और इसमें अपनत्व है। जो व्यक्ति इस भूमि को अपनी पितृभूमि व पुण्यभूमि मानेगा वह कभी इसके साथ विश्वासघात नहीं करेगा। हिन्दू हिन्दुस्थान के लिए जीता है, मरता है और अपना सर्वस्व-समर्पण भी करता है।

पुण्यभूमि का अर्थ है, उसके तीर्थ और महापुरुष इस भारत भूमि में ही उत्पन्न हुए हों। उसके हृदय में यह भाव हों – **फिर जन्में हम इसी भूमि में, यही भाव उर धरे मरें।**

हिन्दू वास्तव में शुद्ध राष्ट्रीय है, जो भारतभूमि को अपनी पुण्यभूमि मानता है। केवल पितृभूमि मानने से कोई राष्ट्रीय नहीं हो सकता, उसे पुण्यभूमि भी स्वीकार करना आवश्यक है।

हिन्दुत्व क्या है? हिन्दुत्व एक आदर्श भारतीय राष्ट्रीय विचार है, जीवन शैली है। जिसने समस्त भारतीय समाज को एक सूत्र में आबद्ध कर लिया है। बौद्ध धर्म के नाम पर केवल बौद्ध अनुयायी आयेंगे, आर्यसमाजी के नाम पर केवल आर्यसमाज वाले ही आयेंगे और सनातनियों में केवल सनातनी ही आयेंगे, परन्तु हिन्दुत्व के नाम पर सनातनी, आर्यसमाजी, सिक्ख, जैन, बौद्ध सभी एक साथ आयेंगे और सम्मिलित रूप से आयेंगे।

अतएव हिन्दुत्व साम्प्रदायिकता नहीं राष्ट्रीयता है। ऐसी राष्ट्रीयता, जिसका भारत के अतिरिक्त कोई अस्तित्व ही नहीं। कितने ही सम्प्रदाय नष्ट हो चुके हैं, और नष्ट हो रहे हैं, परन्तु हिन्दुत्व इन सबके ऊपर है और अमर है।

भारत के प्राचीन नाम

भारत के इतिहास में वैदिक सभ्यता का प्रादुर्भाव प्राचीन साहित्य वेदों के नाम पर हुआ। यहाँ की प्रारम्भिक भाषा संस्कृत तथा प्रारम्भिक धर्म सनातन धर्म के नाम से प्रसिद्ध था। भारत के प्राचीन नाम निम्नवत हैं –

१. भारतवर्ष
२. भरतखण्ड
३. आर्यावर्त
४. हिमवर्ष
५. अजनाभ वर्ष
६. हिन्दुस्थान

एकात्मतास्तोत्रम्

भारत की सांस्कृतिक पहचान इसकी पवित्र तीर्थ पुरियाँ और सद्ग्रन्थ हैं। एकात्मतास्तोत्र के प्रस्तुत श्लोकों में इनका ही स्मरण है –

अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्चिः अवन्तिका।
वैशाली द्वारिका ध्येया पुरी तक्षशिला गया।।६।।

भावार्थ- अयोध्या, मथुरा, मायापुरी (हरिद्वार), काशी, काञ्ची (तमिलनाडु), अवन्तिका (उज्जैन), वैशाली, द्वारका, पुरी, तक्षशिला, गया ये सभी ध्यान करने योग्य तीर्थस्थल हैं।

प्रयागः पाटलीपुत्रं विजयानगरं महत्।
इन्द्रप्रस्थं सोमनाथः तथाऽमृतसरः प्रियम्।।७।।

भावार्थ- प्रयाग (तीर्थराज, संगम) पाटलिपुत्र (पटना), प्राचीन वैभवशाली विजयनगर (तुंगभद्रा नदी पर स्थित), पाण्डवों की राजधानी इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) सोमनाथ तथा अमृतसर महत्त्वपूर्ण तथा प्रिय तीर्थक्षेत्र हैं।

चतुर्वेदाः पुराणानि सर्वोपनिषद्स्तथा।
रामायणं भारतं च गीता सद्दर्शनानि च।।८।।

भावार्थ- चारों वेद, (अठारह) पुराण, सभी उपनिषद्, रामायण, महाभारत और गीता तथा छः दर्शनों में ज्ञान के अकूत भण्डार हैं।

जैनागमास्त्रिपिटका गुरुग्रन्थः सतां गिरः।
एष ज्ञाननिधि श्रेष्ठः श्रद्धेयो हृदि सर्वदा।।७।।

भावार्थ- जैनागम (जैन दर्शन के प्रमाणभूत आगम ग्रन्थ), त्रिपिटक (बौद्ध दर्शन के प्रमाणभूत तीन ग्रन्थ - विनय, सुत्त, अभिधम्म), सिक्खों के गुरु स्वरूप गुरुग्रन्थ साहिब तथा संतों की अमृतवाणियों में उत्कृष्ट ज्ञान के भण्डार हैं। ज्ञाननिधियों को श्रद्धापूर्वक हृदयंगम करना चाहिए।

भारत का भौगोलिक स्वरूप

भारत की भौगोलिक संरचना में लगभग सभी प्रकार के स्थल रूप पाये जाते हैं। उत्तर में विशाल पर्वतमालाएँ, गंगा, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र का समतल मैदान, थार के मरुस्थल आदि भारत की भौगोलिक विविधता है। भारत की पूर्व से पश्चिम की चौड़ाई २९३३ किलोमीटर है। स्थलीय सीमा रेखा १५२०० किलोमीटर, समुद्रतट की लम्बाई ७५१७ किलोमीटर है। भारत का कुल क्षेत्रफल ३२८७२६३ वर्ग किलोमीटर है। विश्व में क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सातवाँ स्थान है।

प्रश्नों के उत्तर जानिए –

प्रश्न.१ भारत का फैलाव कहाँ से कहाँ तक है?

उत्तर यह हिमाच्छादित हिमालय की ऊंचाइयों से प्रारम्भ होकर दक्षिण के विषुवतीय वर्षा वनों तक फैला है।

प्रश्न.२ कौन से तीन सागर भारत की सीमा निर्धारित करते हैं?

उत्तर पूर्व में गंगासागर (बंगाल की खाड़ी), पश्चिम में सिन्धुसागर (अरबसागर) तथा दक्षिण में हिन्द महासागर।

प्रश्न.३ भारत की भूमि किन-किन भागों में बंटी हुई है?

उत्तर १) विस्तृत पर्वतीय प्रदेश, २) सिंधु और गंगा के मैदान, ३) रेगिस्तान क्षेत्र, ४) दक्षिणी प्रायद्वीपीय पठार।

प्रश्न.४ हमारे देश का समुद्र तट कितना लम्बा है?

उत्तर ७००० किलोमीटर।

प्रश्न.५ भारत के कितनी ऋतुएँ होती हैं?

उत्तर १) वसन्त, २) ग्रीष्म, ३) वर्षा या मानसून, ४) शरद, ५) हेमन्त या पूर्व शीतकालीन तथा ६) शिशिर या शीतकालीन

महान राष्ट्रभक्त आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य

शिक्षक साधारण नहीं, प्रलय सृजन सब शक्य।
जिनका वाक्य प्रमाण वे विष्णुगुप्त चाणक्य।।

- **चणक पुत्र चाणक्य –**

आचार्य चणक के पुत्र होने के कारण चाणक्य तथा कूटनीति अपनाने के कारण वे कौटिल्य नाम से प्रसिद्ध हुए। उनका वास्तविक नाम विष्णुगुप्त था। वे तक्षशिला विश्वविद्यालय में प्राध्यापक थे। उनके काल में मगध एक विशाल साम्राज्य था। उसकी राजधानी पाटलिपुत्र में थी। वहाँ घनानन्द का शासन था जो क्रूर और अत्याचारी था। वह सदैव भोग-विलास में डूबा रहता। प्रजा एवं राष्ट्र के हित की उसे कोई चिन्ता न थी।

चाणक्य

- **नन्दवंश के सर्वनाश की प्रतिज्ञा –**

उसी समय सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण कर कई क्षेत्र अपने अधिकार में कर लिए थे। भारतवर्ष को पराधीनता से बचाने के उद्देश्य से आचार्य चाणक्य पाटलिपुत्र पहुँचे। वे मगध नरेश को बताना चाहते थे कि भारत के पश्चिमी क्षेत्र पंजाब, सिन्ध आदि प्रदेशों में यूनानियों का राज्य स्थापित हो गया है और सिकन्दर सम्पूर्ण भारत को जीतने के लिए विशाल सेना के साथ आगे बढ़ रहा है किन्तु सम्राट घनानन्द अपने वैभव-विलास में इतना डूब चुका था कि उसने आचार्य चाणक्य की बात सुनने की अपेक्षा उनका घोर अपमान किया। इससे क्रोधित होकर आचार्य ने अपनी शिखा खोलकर प्रतिज्ञा की कि जब तक मैं नन्दवंश का सर्वनाश नहीं कर लूँगा तब तक शान्ति से नहीं बैठूँगा और शिखा (चोटी) का बन्धन भी नहीं करूंगा।

- **चाणक्य द्वारा चन्द्रगुप्त का निर्माण –**

नन्दवंश को समूल नष्ट करने का संकल्प लेकर वे पाटलिपुत्र से निकले तो देखा कि नगर के बाहर कुछ बालक खेल रहे हैं। उनमें से एक बालक राजा बना हुआ था जो अत्यन्त चतुराई से सबका न्याय कर रहा था। बालक की इस प्रतिभा से प्रभावित होकर चाणक्य उस बालक चन्द्रगुप्त की माता से मिले। चन्द्रगुप्त की माता से अनुमति लेकर, आचार्य ने उस बालक को अपने साथ रखकर युद्ध विद्या में प्रवीण कर दिया। चाणक्य ने गुरुकुलो में अध्ययनरत छात्रों तथा समाज के युवा वर्ग को राष्ट्र रक्षा के लिए अपनी भूमिका समझने की प्रेरणा देकर एक शक्तिशाली सेना तैयार करके चन्द्रगुप्त के नेतृत्व में मगध पर आक्रमण कर विजय पाई। उन्होंने अपने वचनानुसार नन्दवंश का उच्छेद कर, चन्द्रगुप्त को मगध के सम्राट के रूप में सिंहासनारूढ़ किया। आचार्य चाणक्य ने चन्द्रगुप्त के नेतृत्व में भारतीय राजाओं को संगठित कर यूनानी विजेताओं के साथ संघर्ष कर उन्हें भारत से बाहर भगाया। ईसा से ३५० वर्ष पूर्व सिकन्दर ने अपने सेनापति सेल्यूकस निकेटर को भारतीय प्रदेश पर शासन करने के लिए नियुक्त किया। आचार्य चाणक्य ने युद्ध करके उसे हिन्दूकुश की पहाड़ियों के पार खदेड़ा। विवश होकर सेल्यूकस को सन्धि करनी पड़ी। चाणक्य ने इस सन्धि को चिरस्थाई बनाने के उद्देश्य से सेल्यूकस की पुत्री हेलेना से चन्द्रगुप्त का विवाह करवाया।

आचार्य चाणक्य ने अर्थशास्त्र जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना की। चाणक्य नीति और चाणक्य सूत्र उनके रचित अन्य ग्रन्थ हैं। वे वेदज्ञ, शास्त्रपारंगत, मन्त्र विद्या विशेषज्ञ, नीति निपुण राजनीतिज्ञ, प्रगाढ़ कूटनीतिज्ञ होने के साथ ही विविध विधाओं के महापण्डित भी थे।

- **चाणक्य ने एक महान राष्ट्र की स्थापना की –**

अपनी प्रखर कूटनीतिज्ञता के द्वारा आचार्य चाणक्य ने असंगठित भारतीयों को राष्ट्रीयता के सूत्र में पिरोकर महान राष्ट्र की स्थापना की। विशाल मौर्य साम्राज्य के संस्थापक तथा प्रधान अमात्य होते हुए भी वे लोभ-मोह से दूर वीतराग थे। वे राजमहल में न रहकर गंगातट पर बनी एक साधारण-सी कुटिया में रहते थे और अपना भोजन स्वयं बनाते थे। उनके द्वारा स्थापित मौर्य साम्राज्य कालान्तर में एक महान साम्राज्य बना। चन्द्रगुप्त ने उनके मार्गदर्शन में लगभग २४ वर्ष राज्य किया। आचार्य चाणक्य द्वारा स्थापित मौर्य साम्राज्य में भारत ने ज्ञान-विज्ञान, अध्यात्म, व्यापार सभी क्षेत्रों में उन्नति की। यह भारत का स्वर्ण युग था।

प्रश्न – चाणक्य का मूल नाम क्या था?

उत्तर – विष्णुगुप्त।

प्रश्न – मगध क्रांति के अग्रदूत कौन थे?

उत्तर – चाणक्य।

प्रश्न – चाणक्य के मार्गदर्शन में चन्द्रगुप्त ने कितने वर्ष राज्य किया?

उत्तर – लगभग २४ वर्ष।

प्रश्न – आचार्य चाणक्य ने किस ग्रन्थ की रचना की?

उत्तर – अर्थशास्त्र।

प्रश्न – चाणक्य ने चन्द्रगुप्त का विवाह किससे करवाया?

उत्तर – सेल्यूकस की पुत्री हेलेना से।

३. हमारी भारतीय संस्कृति

संस्कृति सबकी एक चिरन्तन, खून रगों में हिन्दू है।
विराट सागर समाज अपना, हम सब इसके बिन्दू हैं॥

भारतीय संस्कृति की चिरंजीविता

भारत विभिन्न जातियों, भाषाओं और धर्मों का देश है। भारत देश में विभिन्न युगों और विभिन्न क्षेत्रों में अनेक धर्मों और सभ्यताओं ने जन्म लिया, विभिन्न धर्मप्रवर्तकों और दार्शनिकों ने भारतभूमि पर अपने मत और विचार का प्रचार-प्रसार किया। इधर-उधर से आये धर्मशिक्षकों और भाषाविदों ने भारतीय संस्कृति के सनातन और पारम्परिक स्वरूप को प्रभावित किया।

भारतभूमि पर जन्मे वैदिक और औपनिषदिक ज्ञान को आरम्भत: जैनधर्म और बौद्धधर्म ने प्रभावित किया। कालान्तर में ईसाई, इस्लाम, पठान, मुगल और पारसी, यूनानी, कुषाण, शक, हूण, पुर्तगाली और अंग्रेजों ने भारत की सभ्यता और संस्कृति पर प्रत्यक्ष-परोक्ष प्रभाव डाला। विकृत होकर भारतीय संस्कृति विनष्ट होने से बचती रही क्योंकि हर बार विपरीत समय के आने पर भारत के निवासी संगठित रहे। एकता, संघर्षशीलता और निडरता ने भारतीय संस्कृति को बचाये रखा।

अपनी सांस्कृतिक विरासत को बचाये रखने के कारण भारतीय संस्कृति सुरक्षित और संरक्षित है। विश्व की अनेक संस्कृतियाँ नष्ट हो गयीं, किन्तु भारतीय संस्कृति का कल्पवृक्ष प्राचीन वैदिककाल से आज तक फूल-फल रहा है। संस्कृति की मंगलकारी विश्वयात्रा सतत बनी रहने से भारत पुन: विश्वगुरु बनने के पथ पर अग्रसर है।

संस्कार

संस्कारों का प्रमुख स्थान परिवार है। भारतीय मनीषियों द्वारा परिवार में सुसंस्कार देने की ठोस एवं व्यापक व्यवस्था अनुपम व अद्वितीय है। यह भारत का विश्व को अनमोल वरदान है। आज विश्व के टूटते हुए परिवारों को जिस जंजीर ने जकड़ा हुआ है उससे मुक्त कराने का कार्य सद्संस्कार व सद्विचारों की पवित्र परम्परा ही कर सकती है।

परिवार प्रकृति की देन है। थोड़ी बहुत भिन्नता के साथ परिवार सभी प्राणियों में होते हैं। पशु-पक्षियों में प्रजनन एवं संरक्षण कार्य तक ही परिवार सीमित हैं। इन प्राणियों में शिशुओं को बड़े होने पर अपने माता-पिता का भी ज्ञान समाप्त हो जाता है। पश्चिमी देशों में परिवार का अर्थ पति-पत्नी व बच्चे ही होता है। बच्चे बड़े होकर अपना अलग परिवार बसाकर रहते हैं। उनके माता-पिता वृद्ध होने पर अकेले रहते हैं। यदि बच्चों में सद्प्रवृत्ति, सद्विचार, आस्था, गर्व व गौरव रूपी संस्कार माता-पिता के प्रति हैं तो वे परिवार कभी नहीं टूटते तथा माता-पिता भी अकेले नहीं रहते।

बालक को सभ्य, सौम्य, विनम्र और शिष्ट बनाने के उपक्रम को संस्कार कहते हैं। संस्कारों के बिना मनुष्य जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। संस्कार हमारे जीवन से ऐसे जुड़े हैं जिससे जीवन यात्रा में सतत् व्यापक परिमार्जन एवं परिष्कार होता है। भारतीय संस्कृति में उल्लिखित सोलह संस्कारों में से यहाँ हम प्रमुख तीन संस्कारों का परिचय प्राप्त करेंगे -

१. **चूड़ाकर्म (मुण्डन) संस्कार** – यह परिवार की परम्परा के अनुसार पहले, तीसरे या पाँचवें वर्ष में जन्म-कालिक केशों का मुण्डन-संस्कार है। मुण्डन का उद्देश्य स्वास्थ्य तथा शरीर का शुद्धिकरण ही है।

२. **उपनयन संस्कार** – 'उपनयन' का अर्थ है गुरु के पास ले जाना (उप=समीप+नयन=ले जाना)। उपनयन का मूल प्रयोजन शिक्षा प्राप्त करना है। बालक यह शिक्षा ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए ग्रहण करता है। यह संस्कार बच्चों में ८ से १२ वर्ष की आयु में कराया जाता है। इसके साथ ही बालक यज्ञोपवीत भी धारण करना प्रारम्भ करता है।

३. **कर्णवेध संस्कार** – यह संस्कार जन्म से पाँचवें-छठे वर्ष में किया जाता है। कर्णवेध आयुर्वेद का विधान तथा कई रोगों का निवारक भी है। यह संस्कार बालक और बालिका दोनों के लिए है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:

अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। भारतीय परम्पराओं में भक्त एवं कर्मयोगी नारियों की अत्यधिक मान्यता है। भारतीय नारी में अतुलित शक्ति है। नीचे कुछ महान् नारियों के कार्यों का वर्णन है, जिन्होंने नारी की गरिमा को उज्ज्वल किया है।

१. ''यमराज! मेरा सुहाग लौटा दो।'' यमराज ने कहा, ''नहीं। कुछ और माँगो''। ''तो मेरे सास-श्वसुर को नेत्र ज्योति प्रदान करें।'' ''तथास्तु!'' ''मेरे श्वसुर का राज्य वापस मिल जाये।'' ''हाँ, यह हो जायेगा।'' ''अच्छा, यमराज! एक वरदान और दीजिए।'' ''क्या ?'' ''मैं पुत्रवती होऊँ!'' यमराज ने बिना सोचे-समझे कह दिया, ''तथास्तु !'' बिना पति के पुत्र कैसे? अन्त में यमराज ने उसके पति को जीवित कर दिया। इस प्रकार ------- ने अपनी सूझ-बूझ और धैर्य से अपने पति के प्राण यमराज से वापस प्राप्त कर लिए। **(सावित्री)**

यमराज और सावित्री

२. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का चौदह वर्ष तक वनवास के कठिन काल में साथ देने वाली महान् पतिव्रता नारी ----- थीं, जिन्होंने लव, कुश जैसे वीर पुत्रों को जन्म दिया। **(सीता)**

३. भामती वाचस्पति मिश्र की पत्नी थी। ग्रन्थ रचना के समय वह मिश्र जी की सेवा तल्लीनता से करती रहीं। परन्तु वे स्वयं ग्रन्थ रचना में इतने तल्लीन रहते थे कि विवाहित होने के पश्चात भी उसको बिल्कुल ही भूल गए। ग्रन्थ समाप्ति पर वाचस्पति ने पूछा- "देवि, तुम कौन हो?" भामती ने उत्तर दिया - "मैं आपकी सहधर्मचारिणी हूँ।" वाचस्पति ने उनके समर्पण एवं सहयोग से प्रसन्न होकर शंकर भाष्य के इस विख्यात ग्रन्थ का नाम -------- रख दिया। **(भामती टीका)**

हमारी मान्यताओं के वैज्ञानिक आधार

हिन्दू संस्कृति अत्यन्त विलक्षण है। इसके सभी सिद्धान्त पूर्णत: वैज्ञानिक और मानव मात्र की लौकिक तथा पारलौकिक उन्नति के लिए हैं। अपने धर्म की वैज्ञानिकता का चिंतन जितनी गम्भीरता से भारतीय संस्कृति में

किया गया है उतना कहीं अन्यत्र नहीं मिलता। हमारे धार्मिक विधानों व आचारों को भविष्यदर्शी ऋषि-मुनियों ने बड़े ही वैज्ञानिक ढंग से सुनियोजित, मर्यादित एवं सुसंस्कृत किया है।

जैसे - कुश का आसन ही क्यों?

कुश ऊर्जा प्रतिरोधक है अर्थात् विद्युत धारा का कुचालक है। पार्थिव विद्युत प्रवाह पैरों के मार्ग से मानव शरीर में संचित आध्यात्मिक शक्ति को खींचकर नष्ट कर देता है। इसकी रोकथाम के लिए पूजा के समय कुश का आसन बिछाते हैं। यह इसका वैज्ञानिक आधार है। ऐसी भी मान्यता है कि कुश धारण करने से सिर के बाल नहीं गिरते, छाती में आघात नहीं होता अर्थात् हार्ट अटैक नहीं होता। यह दूषित वातावरण को शुद्ध करता है।

सांस्कृतिक पर्व/त्योहार

हमारे देश के पर्व हमारी सांस्कृतिक परम्परा के प्रतीक हैं। क्या आप अपने इन पर्वों के सम्बन्ध में जानते हैं? तो आइए, इन रिक्तस्थानों की पूर्ति करें -

१. -------- को शस्त्रों की पूजा होती है। **(विजयादशमी)**

२. अपनी शिक्षा पूर्ण कर जब शिष्य अपने घर को प्रस्थान करते थे तो वे गुरु को ---------- प्रदान करते थे? **(गुरुदक्षिणा)**

३. रक्षाबन्धन का त्योहार भारतीय मास ---- की पूर्णमासी को मनाया जाता है। **(श्रावण)**

४. गुरुपूर्णिमा का उत्सव भारतीय मास ---- की पूर्णिमा को मनाया जाता है। **(आषाढ़)**

५. भारतीय नया वर्ष ------ से प्रारम्भ होता है। **(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा)**

६. गणेश जी का जन्मदिवस ----- को मनाया जाता है। **(भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी)**

७. दीपों के उत्सव का नाम ---------- है। **(दीपावली)**

८. सामाजिक समरसता के भाव में वृद्धि करने के उद्देश्य से शीत ऋतु में मनाये जाने वाले त्योहार का नाम ---------- है। **(मकर संक्रान्ति)**

९. सरस्वती जन्मोत्सव --------- को मनाया जाता है। **(बसन्त पंचमी)**

सदाचार

आप बड़े होनहार छात्र हैं। आप अपने अच्छे व्यवहार के कारण ही तो अपने माता-पिता एवं आचार्यों के प्रिय हैं। अपने सहपाठियों के बीच में आपके गुणों का सम्मान होता है। आखिर क्यों? इसका उत्तर नीचे लिखे वाक्यों के रिक्त स्थान भरने से ज्ञात हो जायेगा -

१. आप आगन्तुकों को दोनों हाथ जोड़कर -------- करते हैं। **(नमस्ते)**

२. घर में पूजा-पाठ के समय पर आप ------- रहते हैं। **(उपस्थित)**

३. आप कक्षा में आचार्य (शिक्षक) जी से ------- लेकर प्रवेश करते हैं। **(अनुमति)**

४. आप सदैव कक्षा में आचार्य (शिक्षक) जी के सम्मुख -------- होकर ही प्रश्न पूछते हैं अथवा उत्तर देते हैं। **(खड़े)**

५. अपने मित्रों के साथ खेलते समय-------- रखते हैं। **(खेल भावना)**

६. मार्ग में चलते समय मिले अंधे, या दिव्यांग व्यक्ति की आप ---- करते हैं। **(सहायता)**

७. जब दो व्यक्ति बात कर रहे हैं तो आप बीच में नहीं --- हैं। **(बोलते)**

८. विद्यालय के उत्सवों के अवसर पर आप अपने साथियों के साथ प्रत्येक ---------- में सहयोग करते हैं। **(कार्य)**

९. आप सदैव बड़ों का ---------- करते हैं। **(सम्मान)**

गुरुभक्त बालक

अपने यहाँ गुरु को भगवान का स्थान प्राप्त है। क्यों न प्राप्त हो? हमारे पालन-पोषण का कार्य हमारे माता-पिता करते हैं और हमारे भावी जीवन का निर्माण गुरु। ऋषिकुल और गुरुकुलों में छात्र को गुरु से माता-पिता का स्नेह भी प्राप्त होता था और वह विद्या भी प्राप्त होती थी जिसके आधार पर छात्र अपने भावी जीवन का निर्माण करता था। तभी तो कहा गया है –

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परमब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।

नीचे कुछ गुरुभक्त बालकों के जीवन की घटनाओं का वर्णन है, उसके आधार पर उस शिष्य का नाम रिक्त स्थानों में अंकित कीजिए –

गुरु धौम्य और आरुणि

१. आकाश में काली घटा घिरी और तेज वर्षा प्रारम्भ हो गई। गुरु धौम्य चिन्तामग्न थे कि धान के खेतों की मेड़ को तोड़कर पानी बाहर न निकल जाये। उनके शिष्य ----- ने उनकी इस चिन्ता को दूर करने हेतु पानी में स्वयं लेटकर पानी को खेत में से निकलने से रोका। **(आरुणि)**

२. ''मैंने तुम्हें गायों का दूध पीने से मना किया है, फिर तुम क्या खा-पीकर दिन बिताते हो?'' गुरु ने शिष्य -------- से प्रश्न किया। शिष्य ने नम्र स्वर में उत्तर दिया, ''गुरुदेव मैं बछड़ों के दूध पीते समय गिरे झाग को चाटकर अपनी क्षुधा शान्त करता हूँ।'' **(उपमन्यु)**

आदर्श विद्यार्थी के गुण

ये वे गुण हैं, जो अच्छे विद्यार्थी में अवश्य होने चाहिए। रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये –

१. सूर्योदय से ---------- उठना। **(पूर्व)**

२. उठकर माता-पिता के -------- स्पर्श करना। **(चरण)**

३. नित्य दाँत ---------- करना। **(स्वच्छ)**

४. नित्य -------- व ---------- करना। **(स्नान, भगवद्भजन)**

५. शरीर को स्वस्थ रखने के लिए नित्य ------- करना। **(व्यायाम)**

६. सदा ------------------ पहनना। **(स्वच्छ कपड़े)**

७. गुरुजनों का ---------- करना। **(आदर)**

८. माता-पिता की ---------- का पालन करना। **(आज्ञा)**

९. सबसे सदा ---------- बोलना। **(प्रिय वाणी)**

१२. अच्छे छात्रों से ---------- रखना। **(मित्रता)**

११. जन्मदिन के अवसर पर उपहार के रूप में ---------- एवं -------- देना चाहिए।
(पेड़-पौधे, पुस्तकें)

१२. परोपकारी कार्यों में सदैव ---------- रहना। **(आगे)**

१३. नित्य कुछ समय महापुरुषों की जीवनियाँ, अच्छे गीतों तथा कहानियों की ---------- अवश्य पढ़ना। **(पुस्तकें)**

१४. माता कहे जाने वाले ---------- के पौधे में पानी अवश्य देना। **(तुलसी)**

१५. सभी प्राणियों के प्रति कल्याण-भाव होने के कारण हमें ---------- को रोटी तथा -------- को आटा खिलाना चाहिए। **(गाय, चींटी)**

अपने विद्यालय के बारे में कुछ बातें यहाँ लिखी हैं। आप इस संदर्भ में 'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर दीजिए -

१. क्या विद्यालय में अवकाश के दिन भी जाने की इच्छा होती है? **हाँ/नहीं**

२. विद्यालय में कहीं पड़ी गन्दगी को क्या आप स्वयं भी साफ करते हैं? **हाँ/नहीं**

३. अपनी कक्षा में डेस्क, कुर्सी, मेज, दीवार पर चित्र तथा मानचित्र व्यवस्थित हैं, क्या यह आप प्रतिदिन देखते हैं? **हाँ/नहीं**

४. क्या विद्यालय में बाल भारती/बाल सभा में व्यवस्था सम्बन्धी छोटे-मोटे काम, झाड़ू लगाना, दरी बिछाना, कुर्सी मेज लगाना आदि काम कभी-कभी आप करते हैं? **हाँ/नहीं**

५. क्या आप विद्या मन्दिर के उद्यान में फल-फूल और पौधों की देखभाल करने में आनन्द लेते हैं? **हाँ/नहीं**

६. क्या विद्यालय के कर्मचारी/ आचार्य / प्रधानाचार्य आदि के प्रति आपके हृदय में स्नेह / सम्मान की भावना है? **हाँ/नहीं**

७. उनके नाम / पते आदि की जानकारी रखते हैं क्या? **हाँ/नहीं**

८. अपने घर आये अतिथि / सम्बन्धियों को क्या आप विद्यालय दिखाने ले जाते हैं? **हाँ/नहीं**

९. क्या आप अपने विद्यालय की विशेषताएँ दूसरों को बताते हैं? **हाँ/नहीं**

४. हमारी परिवार व्यवस्था

हम अपने परिवार के सदस्य हैं। हमारे आचार-विचार एवं व्यवहार परिवार को प्रभावित करते हैं। दिनचर्या हमारे व्यवहार का अभिन्न अंग है। यह हमारे सांस्कृतिक और पारिवारिक संस्कारों को प्रकट करती है इसलिए परिवार व्यवस्था में हमारी और शेष परिवारजनों की दिनचर्या बहुत महत्त्वपूर्ण होती है।

प्रश्न-१ दिनचर्या क्या है?

उत्तर- दिनचर्या अर्थात् हर दिन करने योग्य हमारे कार्यों का निश्चित क्रम। इसे हम समय-सारणी भी कहते हैं। कौनसा काम किस क्रम से करना चाहिए, इसका निर्धारण करते हुए इसे दिनचर्या में जोड़ना चाहिए। परिवार के सभी लोग जिन कार्यों को सामूहिक करते हैं या करना चाहिए, उन्हें भी दिनचर्या में सम्मिलित कर लेना चाहिए, जैसे-सामूहिक पूजा, सामूहिक भोजन आदि। परिवार के सभी सदस्यों की दिनचर्या होनी चाहिए।

परिवार में सामूहिक पूजा

प्रश्न-२ ब्रह्ममुहूर्त में जागरण आवश्यक क्यों?

ब्रह्ममुहूर्त में जागरण से व्यक्ति को सौन्दर्य, लक्ष्मी, बुद्धि, स्वास्थ्य और आयु की प्राप्ति होती है। ब्रह्ममुहूर्त में बहने वाली वायु में सर्वाधिक संजीवनीशक्ति होती है। वह प्रदूषण से मुक्त होती है। आयुर्वेद के अनुसार रात्रि में चन्द्रमा द्वारा पृथ्वी पर बरसाये गये अमृत बिन्दुओं को अपने में समाहित किये हुए यह वायु बहती है। यह सबके लिये गुणकारी होती है। प्रात:कालीन एकान्त, शान्त वातावरण में मस्तिष्क की ग्रहणशीलता बढ़ती है। यह स्थिति शारीरिक स्वास्थ्य, बुद्धि, आत्मा, मन, नेत्र-शक्ति एवं स्मरण-शक्ति को बढ़ाने में सहायक है। इसलिए स्वास्थ्य, साधना और स्वाध्याय के लिए ब्रह्ममुहूर्त सर्वश्रेष्ठ समय होता है।

प्रश्न-३ दिनचर्या प्रभावी और मंगलमय कैसे हो?

उत्तर- रोग निरोधक शक्ति बढ़ाने के लिए कुछ आचरण आवश्यक हैं। वे हैं, नित्य स्नान, नित्य ध्यान, नित्य व्यायाम, सप्ताह में एक बार अभ्यंग (मालिश), पखवाड़े में एक बार उपवास। ऋतुओं के अनुसार आहार-विहार बदल देना चाहिए। हर दिन देवालय जाना चाहिए। वर्ष में एक बार परिवार के साथ देशाटन, तीर्थाटन पर जाना चाहिए। इससे शरीर तथा मन का निरन्तर सम्पोषण होगा। मन प्रसन्न होगा तथा उत्साह बना रहेगा।

प्रश्न-४ स्नान का क्या महत्त्व है?

उत्तर- नित्य स्नान भारतीय परम्परा है। शरीर हर पल मलीन होता है। इसलिए इसे शुद्ध करना आवश्यक है

अन्यथा मलीनता शरीर के लिए घातक बन जाती है। **'स्नानेन शुद्धिः'** अर्थात् शुद्धि स्नान से होती है। इसलिए प्रातः का स्नान कभी नहीं टालना चाहिए। स्नान का प्रभाव शरीर, मन, बुद्धि सभी पर पड़ता है। बिना स्नान किए शरीर पर सुगन्धित तेल या इत्र लगा लेना बुद्धिमानी नहीं है। भारतीय परिवारों में पूजा-पाठ या अन्य धार्मिक कार्यों से पूर्व स्नान आवश्यक है।

प्रश्न-५ प्रातः बिस्तर से उठने के बाद क्या करना चाहिए?

उत्तर प्रातःकाल दोनों हथेली देखते हुए निम्नलिखित श्लोक बोलना चाहिए -

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते कर दर्शनम्॥

इसके बाद हाथ जोड़कर मातृभूमि को नमन करना चाहिए -

समुद्रवसने देवि! पर्वतस्तनमण्डले।
विष्णुपत्नि! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।

समुद्र रूपी वस्त्र धारण करने वाली, पर्वत रूपी स्तनमण्डलों से युक्त देवि! हे विष्णु पत्नि! मेरे द्वारा होने वाले इस पदस्पर्श के लिए मुझे क्षमा कीजिए।

प्रश्न-६ परिवार के सदस्यों के सामान्य दायित्व क्या हैं?

उत्तर परिवार के सदस्यों को गीता, गंगा, गौ, गणेश, गायत्री एवं गोविन्द का सम्मान यथोचित ढंग से करना चाहिए।

मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः।
वृद्धिमाकाङ्क्षता नित्यं गावः कार्याः प्रदक्षिणा॥

गाय सभी जीवों के लिए माँ के समान है। गाय सबको सुख देती है। अपने जीवन में अनुकूलता हो, ऐसी अपेक्षा करने वाले सभी लोगों को गाय की पूजा करते हुए उसे नमन-प्रदक्षिणा करनी चाहिए।

आहार-विहार

यथा अवस्था देह की, जो ऋतु के अनुकूल।
जिस प्रदेश में जो सहज, अन्न कंद फल मूल॥
उनका सेवन कीजिए, त्याग स्वाद का लोभ।
ऋतु अनुसार ही पहनिये, वेश रहे ना क्षोभ॥
गीता का उपदेश भी युक्ताहार-विहार।
वर्णित आयुर्वेद में सब विहार-आहार॥

भारत के मनीषियों में गम्भीर एवं जटिल विषयों को अत्यन्त सरल ढंग से प्रस्तुत करने की विलक्षण प्रतिभा थी। इन ऋषि-मुनियों, साहित्यकारों तथा वैज्ञानिकों ने केवल आध्यात्मिक विषयों का ही विचार-विवेचन किया, ऐसा नहीं है। उन्होंने गणित, ज्योतिष आयुर्वेद, आहार-विहार जैसे विषयों में अग्रगामी योगदान दिया है।

बारहमासा गीत के रूप में यह आहार-तालिका हमारे पूर्वजों के अनुभव से उपजा सारतत्त्व है, जिसमें किस माह में कौन सी वस्तु खाने अथवा कौन सी न खाने से हमारा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, यह बताया गया है।

याद कर लीजिए –

बारहमासा

चैत्र मास में गुड़ मत खाना, दिन उगते ही चने चबाना।
आए जब **वैशाख** महीना, तेल छोड़, बेल रस पीना।
जेठ मास राई मत खाओ, बीस मिनट दिन में सो जाओ।
मत **आषाढ़** बेल फल खाना, खेल-कूद में लगन बढ़ाना।
सावन नींबू खाना छोड़ो, बाल-हरड़ से नाता जोड़ो।
भादों माह मही मत पीना, तिक्त वस्तु का लाभ उठाना। (मही अर्थात् छाछ)
क्वार करेला कभी न खाना, लेकिन गुड़ से हाथ मिलाना। (क्वार अर्थात् आश्विन)
कार्तिक माह दही मत खाना, किन्तु आँवले को अपनाना।।
अगहन में जीरा मत खाना, तेल युक्त भोजन अपनाना। (अगहन अर्थात् मार्गशीर्ष)
पौष मास में धनिया छोड़ो, दुग्धपान से नाता जोड़ो ।।
माघ माह में मिश्री छोड़ो, घी-खिचड़ी भोजन में जोड़ो।
फाल्गुन माह चने मत खाना, प्रातःकाल अवश्य नहाना।

इस प्रकार से बारह मासों में होने वाले प्रकृति परिवर्तनों के अनुसार हमने अपनी भोजन व्यवस्था को ठीक करने का प्रयास किया तो निःसन्देह हम स्वस्थ रहेंगे। प्रतिदिन व्यायाम, घूमना, दौड़ना, उछलना-कूदना, सभी विहार के अलग-अलग रूप हैं। जानकारी के अभाव में आहार में क्या-लेना, क्या कब त्यागना हम भूल गए हैं।

स्मरण रखें – आहार-विहार के पहले आपने विचार नहीं किया तो आपके चिकित्सक को आपके लिए विचार करना पड़ेगा।

सद्गुणों का विकास

(क) निर्भयता- निडर होकर किसी भी अच्छे कार्य को करने का स्वभाव।

१. चक्रवर्ती भरत – बचपन में सिंह शावकों के साथ खेलता था और दाँत गिनता था।
२. लव-कुश – भगवान श्रीराम द्वारा छोड़े गए अश्वमेध के घोड़े को पकड़ लिया तथा उनकी अजेय सेना से युद्ध किया।
३. अभिमन्यु ने चक्रव्यूह भेदन का साहस किया।
४. बाल क्रांतिकारी खुदीराम बोस ने दुष्ट अंग्रेज अधिकारी किंग्सफोर्ड की गाड़ी में बम फेंकने का साहस कम उम्र में दिखाया था।

चक्रवर्ती भरत

५. शिवाजी- गाय का वध करने ले जाने वाले कसाई का हाथ बचपन में अपनी तलवार से काट डाला।

(ख) सद्‌भाव- सभी के प्रति प्रेमभाव तथा सहयोग का भाव रखना।

(ग) अतिथि सत्कार- अतिथि भगवान् का रूप होता है उसका यथोचित सम्मान, सेवा तथा सत्कार करना।

सुभाषित

सुभाषित अनुभवी विद्वानों द्वारा बताए गए जीवन में उपयोगी सूत्रों का सारांश है। इनको समझकर हम अपने जीवन को सुखी, सरल और सार्थक बना सकते हैं –

हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं भूषणैः किं प्रयोजनम् ॥१॥

अर्थ : हाथ का आभूषण दान देना, कण्ठ का आभूषण सत्य बोलना, कान का आभूषण शास्त्र सम्मत बातों को सुनना, जिनके पास ये आभूषण हैं उनको अन्य सोने-चाँदी के आभूषणों से का क्या उपयोग?

विद्या ददाति विनयं, विनयात् याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति, धनाद्धर्मं ततः सुखम् ॥२॥

अर्थ : विद्या विनम्रता देती है, विनम्रता से योग्यता आती है, योग्यता से धन प्राप्त होता है, धन से धर्म होता है, धर्म से सुख की प्राप्ति होती है।

पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः ।
धाराधरो वर्षति नात्महेतोः परोपकाराय सतां विभूतयः ॥३॥

अर्थ : जिस प्रकार नदियाँ स्वयं जल नहीं पीतीं, वृक्ष स्वयं फल नहीं खाते, मेघ स्वयं के लिए वर्षा नहीं करते, उसी प्रकार सज्जनों की विभूतियाँ भी दूसरों की भलाई के लिए होती हैं।

व्यायामपुष्टगात्रस्य, बुद्धिस्तेजो यशोबलम् ।
प्रवर्धन्ते मनुष्यस्य, तस्माद् व्यायाममाचरेत् ॥४॥

अर्थ : व्यायाम से मनुष्य का शरीर पुष्ट होता है, बुद्धि तीव्र होती है तथा यश और बल की वृद्धि होती है, इसलिए व्यायाम करना चाहिए।

उद्यमेन हि सिद्धयन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य, प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥५॥

अर्थ : परिश्रम करने से ही कार्य की सिद्धि होती है, इच्छाओं से नहीं, क्योंकि सोए हुए सिंह के मुँह में हिरन स्वयं प्रवेश नहीं करते हैं अर्थात् कर्म करने से ही कार्य सिद्ध होते हैं।

सन्तवाणी

भारतीय संस्कृति के विकास और संरक्षण में सन्त-समाज का अमूल्य योगदान है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने तो सन्तों को 'चलता फिरता तीर्थ' कहा है। श्रेष्ठ जीवन-मूल्यों की स्थापना के लिए 'सन्तवाणी' अनुभवों का विश्वविद्यालय है। आइए, सन्त कबीर और कविवर रहीम के कुछ सीख भरे दोहों का अध्ययन करें –

कबीर –

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।
जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान।।

रहीम –

रूठे सुजन मनाइये जो रूठे सौ बार।
रहिमन फिरि फिरि पोइये, टूटे मुक्ताहार।।
रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजै डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि।।
जो रहीम जस होत है, उपकारी के संग।
बाँटनहारे को लगे, ज्यों मेंहदी को रंग।।
जो रहीम उत्तम प्रकृति, का कर सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग।।

महात्मा कबीर

गीत

देश हमें देता है सब कुछ हम भी तो कुछ देना सीखें

देश हमें देता है सब कुछ हम भी तो कुछ देना सीखें।।ध्रु०।।
सूरज हमें रोशनी देता, हवा नया जीवन देती है
भूख मिटाने को हम सबकी, धरती पर होती खेती है
औरों का भी हित हो जिससे, हम ऐसा कुछ करना सीखें
देश हमें देता है .....।।१।।

गर्मी की तपती दोपहर में, पेड़ सदा देते हैं छाया
सुमन सुगन्ध सदा देते हैं, हम सबको फूलों की माला
त्यागी तरुओं के जीवन से, हम परहित कुछ करना सीखें
देश हमें देता है .....।।२।।

जो अनपढ़ हैं उन्हें पढ़ाएँ, जो चुप हैं उनको वाणी दें
पिछड़ गए जो उन्हें बढ़ाए, समरसता का भाव जगा दें
हम मेहनत के दीप जलाकर, नया उजाला करना सीखें
देश हमें देता है .....।।३।।

एक चुनौती : स्वदेशी के लिए

क्या तुम चुप रहोगे?
जब गीता के देश को
''हेलो'' शेम्पू धोएगा और
'कोलगेट' से चमके,
विदेशी दाँत काटेंगे
भारत का वैभव,
क्या तुम चुप रहोगे?
जब 'पेप्सी' की लहर, विदेशी जहर
पिलाएगी
और 'यूनियन कार्बाइड', मृत्यु की
लहर लाएगी
क्या तुम चुप रहोगे?
जब बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के वादे
'रिन' के बुलबुलों की तरह फट जायेंगे
और 'नेसकैफे' काफी की कालिख में
दब जायेगी भारतीय पेय उद्योग की आत्मा
क्या तुम चुप रहोगे?
जब 'फिलिप्स' के बल्ब
विदेशी क्रूर रोशनी का अन्धेरा
और ''विमको'' की माचिसें
जला डालेंगी इतिहास में
पका हुआ हमारा व्यक्तित्व
क्या तुम चुप रहोगे?
जब बच्चों के मुँह से
छीना गया दूध बनकर आएगा,
''कैडबरी'' की चॉकलेट
क्या मीठा लगेगा तुम्हें?
जब विदेशी ''ब्रुक बाण्ड'' का
टाइगर
उछलेगा स्वदेशी चेतना पर?
आ गया है दानव बहुराष्ट्रीय कम्पनियों
का
स्वदेशी के दमकते हुए सूर्य से
हम उसकी आंखें चौंधियाँ देंगे
और उसके मस्तक पर
अपने स्वावलम्बन के ब्रह्म अस्त्र से
करेंगे शक्तिशाली प्रहार।
स्वीकार है यह चुनौती,
स्वदेशी अपनायेंगे
विदेशी भगायेंगे,
देशभक्त कहलायेंगे।

स्वदेशी तकनीक से निर्मित वायुयान 'तेजस'

भारतीय भाषाएँ

भारत और भाषा-विज्ञान! आज के पाश्चात्य जगत का भाषा-विज्ञान लगभग १००० वर्ष से अधिक समय पूर्व के भारत के भाषा-विज्ञान की प्रत्यक्ष देन है।

– मुर्रे बार्नसन इमेना (कैलिफोर्निया)

मनुष्य परिवार में पल-बढ़कर समाज का अंग बनता है। परिवार में रहते हुए सुख-दुख और अपने विचारों को प्रकट करता है। मनुष्य इन विचारों को पढ़कर, लिखकर, बोलकर और कई बार संकेतों की सहायता से प्रकट करता है। भावों व विचारों की अभिव्यक्ति भाषा कहलाती है। भाषा के अनेक रूप प्रचलित हैं जो इस प्रकार हैं –

१) **मातृभाषा** – वह भाषा जिसे बच्चा अपने परिवार के परिवेश में सीखता है।

२) **राजभाषा** – जिसका प्रयोग राजकीय प्रयोजनों व सार्वजनिक कार्यों में होता है।

३) **राष्ट्रभाषा** – किसी राष्ट्र की मुख्य प्रचलित भाषा राष्ट्रभाषा कहलाती है।

४) **संपर्क भाषा** – जो भाषा सांस्कृतिक तथा भाषिक स्तर पर राष्ट्र को जोड़ने का काम करती है।

५) **राष्ट्रीय भाषा** – किसी भी देश में प्रयोग हो रही सभी भाषाएँ उस राष्ट्र की राष्ट्रीय भाषाएँ कहलाती हैं।

मातृभाषा क्या है?

भाषा मानव द्वारा निर्मित वह साधन है, जिसके माध्यम से वह अपने भावों, विचारों आदि की अभिव्यक्ति करता है। भाषा पैतृक सम्पत्ति न होकर अर्जित सम्पत्ति होती है। बालक अनुकरण एवं चेष्टा द्वारा भाषा सीखने का प्रयास करता है। वह सर्वप्रथम अपनी माता का अनुकरण करता है। कहा जा सकता है कि माता अपने बालक से जिस भाषा में बात करती है, वह भाषा उस बालक के लिए मातृभाषा बन जाती है। अपनी जननी (माता) की गोद में माता से सीख कर बोली गई भाषा/बोली मातृभाषा कहलाती है। भाषा हमारे आचार-विचार तथा संस्कार की पहचान होती है। अपनी मातृभाषा के गौरव की तुलना किसी भी अन्य भाषा से नहीं हो सकती है।

५. हमारी ज्ञान परम्परा

भारत धर्मों की भूमि है, सभ्यताएँ इसकी गोद में पली हैं, यह वाणी की माता है, पुराणों की दादी है, परम्पराओं की परदादी है। विद्वान विचारक इस देश के दर्शन के लिए लालायित रहते हैं और एक बार दर्शन होने पर, मात्र इसकी झलक मिलने पर उसे शेष विश्व के सम्मिलित शानदार प्रदर्शनों के लिये भी नहीं छोड़ना चाहते।

– मार्क ट्वेन (अमेरिका)

भारतीय जीवन दृष्टि व जीवन शैली

भारत विश्व का आदि राष्ट्र है। जगत में भारत एकमात्र राष्ट्र है जो सृष्टि के प्रारम्भ से आज तक अपनी विशिष्ट जीवन दृष्टि एवं जीवन शैली के साथ चला आ रहा है। इस अध्याय में हम इसी भारतीय जीवन दृष्टि को समझने का प्रयत्न करेंगे।

प्रत्येक राष्ट्र और उसके निवासी अपनी प्रकृति एवं स्वधर्म के अनुसार जीव, जगत एवं जगदीश को देखते हैं। राष्ट्र के नागरिक जीवन को जिस दृष्टि से देखते हैं वह उस राष्ट्र की जीवन दृष्टि कहलाती है। भारत की अपनी एक जीवन दृष्टि है। इसी जीवन दृष्टि के आधार पर एक जीवन शैली यहाँ विकसित हुई। यहाँ के लोगों का वैसा ही मानस बना, वैसा ही व्यवहार यहाँ होता है। उस व्यवहार के अनुरूप और अनुकूल व्यवस्थाएँ बनी हैं और इन सब के आधार पर यहाँ के नागरिकों का जीवन चलता है। हमारी जीवन शैली का आधार आत्मतत्त्व है। इस आत्मतत्त्व को केन्द्र में रखकर किया गया व्यवहार और व्यवस्थाएँ आध्यात्मिक हैं, इसीलिए हमारा देश भारत, आध्यात्मिक देश है।

आइये, इन प्रश्नोत्तरों से इस विषय के सम्बन्ध में कुछ बिन्दुओं को समझने का प्रयत्न करें –

प्रश्न– जिस प्रकार प्रत्येक मनुष्य दूसरे मनुष्य से स्वभाव में भिन्न होता है, उसी प्रकार एक देश की प्रकृति दूसरे देश की प्रकृति से भिन्न होती है। वह भिन्नता कितने प्रकार की होती है?

उत्तर – यह भिन्नता दो प्रकार की होती है – १. बाहरी भिन्नता, २. आन्तरिक भिन्नता। बाहरी भिन्नता रूप-रंग, खान-पान, वेशभूषा तथा बोली-भाषा की होती है, जबकि आन्तरिक भिन्नता स्वभाव (प्रकृति) की होती है।

प्रश्न– सज्जन व दुर्जन व्यक्ति का पता कैसे चलता है?

उत्तर– सज्जन व दुर्जन व्यक्ति का पता उसके स्वभाव से चलता है। कोई धनी व आकर्षक व्यक्तित्व वाला व्यक्ति स्वभाव से दुर्जन हो सकता है और एक निर्धन व सामान्य दिखने वाला व्यक्ति स्वभाव से सज्जन हो सकता है। अतः सज्जन व दुर्जन का सही पता तो उनके स्वभाव को जानने से ही चलता है।

प्रश्न – व्यक्तिगत जीवन और राष्ट्र जीवन में किन बातों का बड़ा महत्त्व है?

उत्तर – व्यक्ति और राष्ट्र के जीवन में, मूल्यों का व उनके स्व-भाव का बड़ा महत्त्व है।

प्रश्न – प्रकृति के आधार पर ही व्यक्ति या राष्ट्र का स्वधर्म बनता है। क्या आप जानते हैं कि भारत की प्रकृति क्या है और उसका स्वधर्म क्या है?

उत्तर – भारत की प्रकृति आध्यात्मिक है और उसका स्वधर्म सम्पूर्ण विश्व को ज्ञान देकर श्रेष्ठ बनाना है। जैसे, अमेरिका की प्रकृति अर्थकेन्द्रित है, इसलिए उसका स्वधर्म सम्पूर्ण विश्व में व्यापार करना है और उसी के अनुरूप वहाँ के निवासियों का जीवन व्यवहार होता है।

हमारा प्राचीन वांग्मय

वैज्ञानिक मस्तिष्क चाहे जो खोज कर ले किन्तु वे उपनिषदों द्वारा प्रतिपादित शाश्वत सत्यों का खण्डन नहीं कर सकते।

– पॉल डेउस्सेन (जर्मन विद्वान)

भारत के सदियों से संचित अपार ज्ञान भण्डार को समझना है तो हमें अपने प्राचीन वांग्मय का अध्ययन करना होगा। प्रमुख ग्रन्थों का परिचय इस प्रश्नोत्तरी के माध्यम से जानिए –

प्रश्न – **वेदों के कितने अंग हैं?**

उत्तर वेदों के ६ अंग हैं –

१. शिक्षा २. कल्प ३. व्याकरण ४. निरुक्त ५. छन्द ६. ज्योतिष।

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते। ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रौत्रमुच्यते॥
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्। तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते॥

अर्थात् **छन्द पैर हैं, हाथ कल्प हैं, ज्योतिष नेत्र, निरूक्त हैं कान।**
शिक्षा नाक, व्याकरण मुख है वेदपुरुष के अंग प्रधान॥

प्रश्न – **वेदों के उपांग (उप अंग) क्या हैं?**

उत्तर १. दर्शन २. स्मृति ३. पुराण/इतिहास ४. उपवेद

प्रश्न – **आगम और निगम में क्या अन्तर है?**

उत्तर भगवान शिव द्वारा माता पार्वती को कहे गये उपासना सम्बन्धी ग्रन्थ आगम कहलाते हैं। वेदों से सम्बन्धित ग्रन्थों को निगम कहा जाता है।

प्रश्न – **आगम कितने प्रकार के हैं?**

उत्तर आगम तीन प्रकार के हैं – १. वैष्णव आगम २. शैव आगम ३. शाक्त आगम।

प्रश्न – **स्मृति ग्रन्थ किसे कहते हैं?**

उत्तर जिन ग्रन्थों में वर्ण-आश्रम व्यवस्था के अनुसार समस्त मनुष्यों के कर्तव्यों तथा अर्थशास्त्र का वर्णन किया जाता है, वे स्मृति ग्रन्थ कहलाते हैं।

प्रश्न – उपनिषद् कितने हैं?

उत्तर प्रमुख उपनिषद् ११ हैं – १. ईशावास्य २. केन ३. कठ ४. प्रश्न ५. मुण्डक ६. ऐतरैय ७. माण्डूक्य ८. श्वेताश्वतर ९. छान्दोग्य १०. तैत्तिरीय ११. बृहदारण्यक।

कुल उपनिषदों की संख्या १०१ या इससे भी अधिक बतायी जाती है किन्तु उनमें से अधिकांश अब आक्रमणकारियों द्वारा नष्ट किए जाने के कारण उपलब्ध नहीं हैं।

श्रीरामचरितमानस और श्रीमद्भगवद्गीता दो ऐसे महान ग्रन्थ हैं जिनमें जीवन को श्रेष्ठतम बनाने के अमूल्य सूत्र वर्णित हैं। आइए, इनके कुछ अंशों का अध्ययन करें –

श्रीरामचरितमानस प्रसंग

अच्छे मित्र के लक्षण

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी। तिन्हहि बिलोकत पातक भारी॥
निज दुख गिरि सम रज करि जाना। मित्रक दुख रज मेरु समाना।

जो लोग मित्र के दु:ख से दुखी नहीं होते, उन्हें देखने से भी बड़ा पाप लगता है। अपने पर्वत के समान दु:ख को धूल के समान और मित्र के धूल के समान दु:ख को सुमेरु (बड़े भारी पर्वत) के समान जानने वाला ही सच्चा मित्र है। ॥१॥

जिन्ह कें असि मति सहज न आई। ते सठ कत हठि करत मिताई॥
कुपथ निवारि सुपंथ चलावा। गुन प्रगटै अवगुनन्हि दुरावा॥

जिन्हें स्वभाव से ही ऐसी बुद्धि प्राप्त नहीं है, वे मूर्ख हठ करके क्यों किसी से मित्रता करते हैं? मित्र का धर्म है कि वह मित्र को बुरे मार्ग से रोककर अच्छे मार्ग पर चलावे। उसके गुण प्रकट करे और अवगुणों को छिपावे ॥२॥

देत लेत मन संक न धरई। बल अनुमान सदा हित करई॥
बिपति काल कर सतगुन नेहा। श्रुति कह संत मित्र गुन एहा॥

देने-लेने में मन में शंका न रखे। अपने बल के अनुसार सदा हित ही करता रहे। विपत्ति के समय में तो सदा सौगुना स्नेह करे। वेद कहते हैं कि संत (श्रेष्ठ) मित्र के गुण (लक्षण) ये हैं॥३॥

श्रीमद्भगवद्गीता

कर्म-सन्देश

प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में कर्म तो करना ही पड़ता है। बिना कर्म किए कोई भी व्यक्ति रह नहीं सकता। कर्म के आधार पर ही हमारा भावी जीवन निर्माण होता है। ऐसे कर्म के बारे में गीता हमें यह संदेश देती है –

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मण:।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मण: ॥३/८॥

अर्थात् तू शास्त्र विदित कर्तव्य-कर्म कर; क्योंकि कर्म न करने की अपेक्षा कर्म करना श्रेष्ठ है तथा कर्म न करने से तेरा शरीर-निर्वाह भी सिद्ध नहीं होगा।

भगवान श्रीकृष्ण-अर्जुन

कर्म बोध - कर्म की व्याख्या

कोई भी मनुष्य किसी भी काल में क्षण-मात्र भी बिना कर्म किये नहीं रहता है। **न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत॥३/५॥** इसलिए भगवान श्रीकृष्ण ने श्री गीता जी में सर्वप्रथम कर्म और कर्मयोग का बोध कराया है :-

कर्मण्येवाऽधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥२/४७॥

अर्थात् तेरा कर्म करने में ही अधिकार है (उसके) फलों में कभी नहीं। (इसलिए तू) कर्मों के फल का हेतु मत हो (तथा) तेरी कर्म न करने में (भी) आसक्ति न हो।

अथवा ऐसा कहें कि मृत्यु पर्यन्त हमें कर्म करने की (पूर्ण) स्वतन्त्रता है और प्रत्येक कर्म से फल जुड़ा हुआ है। जैसा कर्म वैसा फल। यद्यपि, यह विषय इतना सरल भी नहीं है।

कर्म का स्वरूप जानना क्यों आवश्यक?

'कर्म के सिद्धान्त' की मूल भावना से परिचित होना अनिवार्य है। भगवान् श्रीकृष्ण 'कर्म' को जानने के लिए स्वयं कह रहे हैं साथ ही सावधान भी कर रहे हैं -

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मण:।
अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गति: ॥४/१७॥

अर्थात् कर्म का स्वरूप भी जानना चाहिए और अकर्म का स्वरूप भी जानना चाहिए; तथा विकर्म का स्वरूप भी जानना चाहिए; क्योंकि कर्म की गति गहन है।

कर्म का सिद्धान्त

मनुष्य शरीर-धारियों को ही कर्म का अधिकार है, स्वतन्त्रता है। पृथ्वी लोक पर मनुष्य प्राणी को छोड़ कर अन्य जितने भी चर-अचर प्राणी हैं; वे सभी भोग रूपी प्रायश्चित ही कर रहे हैं। केवल मनुष्य शरीरधारियों के लिए ही पश्चात्ताप, प्रायश्चित, परोपकार, कर्तव्यपालन, पुण्यकर्म, आत्मोत्कर्ष, आत्मोद्धार की सुविधा है। अत: यह जान लेना पर्याप्त है कि -

ये तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं।
क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति॥९/२१(पूर्वार्द्ध)॥

अर्थात् वे (जो अच्छे कर्मों के फलस्वरूप स्वर्गलोक को गए थे) उस विशाल स्वर्गलोक को भोग कर पुण्य क्षीण होने पर मृत्युलोक (पृथ्वी) पर (पुन:) आ जाते हैं।

भगवान् ने 'अकर्मण्यता' (स्थिरता, निष्क्रियता, आलस्य आदि) के लिए तो पहले ही चेतावनी दी हुई है। (मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि)।

सारांश यह है कि **अच्छे कर्म करते रहना ही हमारा उद्देश्य होना चाहिए।**

भारतीय योग

सकल विश्वहित योग का, अतुलनीय सहयोग।
देश-काल सीमा परे, है भारत का 'योग'॥

प्राचीन भारतीय विद्या के रूप में आज योग की सर्वत्र चर्चा है। पाश्चात्य देशों में भी योग के प्रति जिज्ञासा जाग्रत हुई है। स्थान-स्थान पर वहाँ हमारे देश से गये हुए योग गुरुओं द्वारा केन्द्र खोले जा चुके हैं जहाँ हजारों विदेशी युवक-युवतियाँ योग का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

यौगिक क्रियाओं द्वारा शारीरिक अवयवों को सशक्त, इन्द्रियों को नियन्त्रित, मन को एकाग्र, भावनाओं को सन्तुलित, प्राण को अनुशासित और बुद्धि को विवेकशील बनाकर स्वयं को अहंकार, द्वेष आदि दोषों से मुक्त कर आत्मिक निर्मलता प्राप्त कर सकते हैं।

योग एक विकसित विज्ञान है, केवल शारीरिक व्यायाम मात्र नहीं है। इसकी मुद्रायें तथा आसन जहाँ शरीर को सशक्त, निरोग, सुडौल तथा रोग निरोधक बनाते हैं, वहीं प्राणायाम, धारणा, ध्यान आदि मानसिक एकाग्रता एवं बुद्धि को प्रखरता प्रदान करते हैं। यम, नियमादि का अभ्यास चारित्रिक विकास का आधार है।

योग प्रार्थना

योगेन चित्तस्य पदेन वाचा मलं शरीरस्य च वैद्यकेन।
योऽपाकरोत्तं प्रवरं मुनीनां पतञ्जलि प्राञ्जलिरानतोऽस्मि॥
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भागभवेत्॥
ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

अष्टांग योग

यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि॥ पातञ्जल योगसूत्र २.२९॥
यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि - ये योग के आठ अंग हैं।

यम - यम का सामान्य अर्थ है संयम। ये पाँच हैं- अहिंसा (किसी को कष्ट न देना), सत्य, अस्तेय (किसी की वस्तु न लेना), ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह (आवश्यकता से अधिक संग्रह न करना।)

नियम - शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान।

आसन - आह्वान और ध्यान मन्त्रों के साथ सूर्य नमस्कार, मत्स्यासन, पद्मासन, शलभासन, सुप्त वज्रासन, पश्चिमोत्तानासन, धनुरासन आदि।

प्राणायाम – यौगिक श्वसन, शीतली, भ्रामरी, शीतकारी, ब्रह्मनाद, चन्द्रभेदी, सूर्यभेदी आदि प्राणायाम।

प्रत्याहार – अपने-अपने विषयों के संग से रहित होने पर, इन्द्रियों का चित्तके-से रूप में अवस्थित हो जाना 'प्रत्याहार' है।

धारणा – अपने चित्त को किसी निश्चित ध्येय विषय पर एकाग्र कर लेना।

ध्यान – श्वास पर एकाग्रता, शरीर की स्थिरता।

समाधि – ध्यान की वह उच्च अवस्था जिसमें साधक परमात्मा से एकाकार होने का अनुभव करता है।

२१ जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। यह भारत के योग की विश्व को देन है।

व्यक्तिगत जीवन में संकल्प

दृढ़ता, शुभता, एकता, अटल, अचल आचार।
स्थिर मन, मति, कर्म ही है संकल्प विचार॥

- ☑ **प्रतिदिन बड़ों व गुरुजनों का चरण स्पर्श व सेवा करूँगा।**
- ☑ **प्रतिदिन योगाभ्यास करूँगा। थाली में खाद्य सामग्री नहीं छोड़ूँगा।**
- ☑ **जिसे आवश्यकता है उसको निःस्वार्थ सेवा प्रदान करूँगा।**
- ☑ **अपना एक दुर्गुण हटाऊँगा।**
- ☑ **किसी भी परिस्थिति में अपशब्द नहीं बोलूँगा।**
- ☑ **व्यक्तिगत लाभ के लिए किसी को हानि नहीं पहुँचाऊँगा।**

श्रीराम जी की गुरुभक्ति

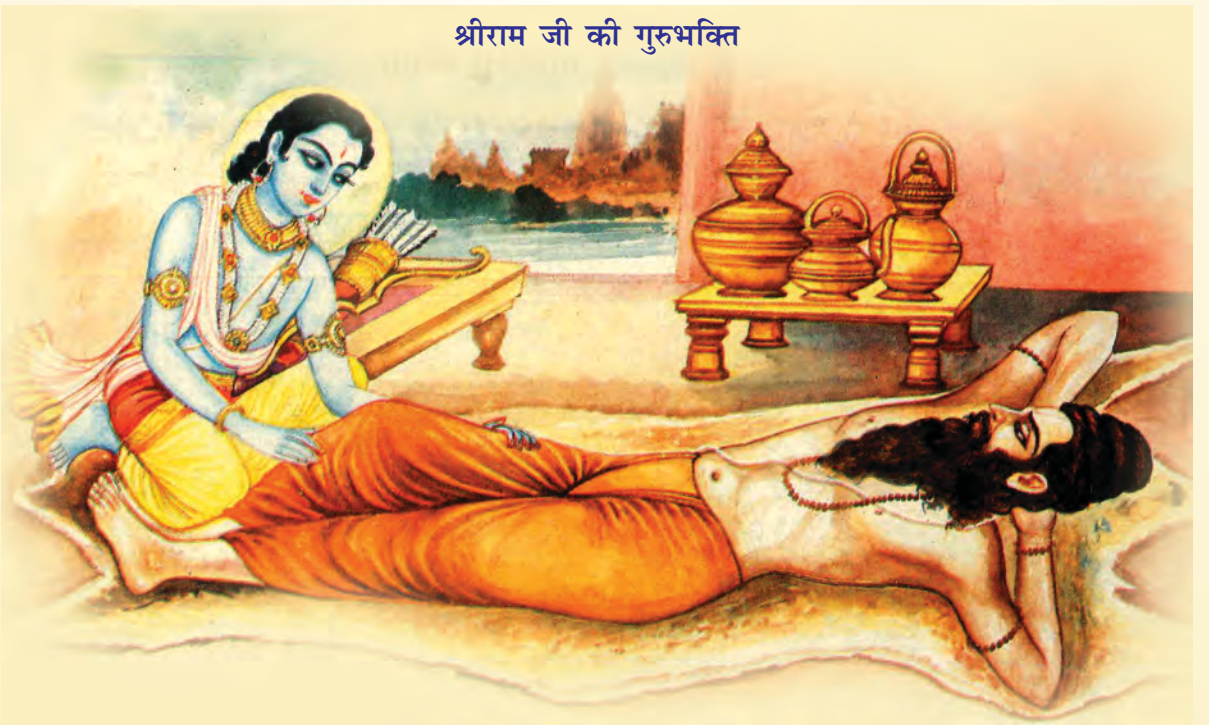

६. हमारी वैज्ञानिक परम्परा

हम भारत के अत्यंत ऋणी हैं जिन्होंने हमें गिनना सिखाया, जिसके बिना कोई भी सार्थक वैज्ञानिक खोज नहीं की जा सकती थी।

– प्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्स्टाइन

विज्ञान

प्रश्न.१ भारत की वैज्ञानिक दृष्टि कैसी रही है?

उत्तर भारत प्राचीन काल से ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखकर कार्य करता आ रहा है। हमारे ऋषि-मुनि वैज्ञानिक थे। उन्होंने अपने शोधों में विज्ञान को प्राचीन ग्रन्थों में लिखा। हमारी परम्पराओं में भी तार्किकता है।

प्रश्न.२ यदि भारत प्राचीन काल से विज्ञान को जानने वाला देश रहा तो आज पिछड़ा क्यों है?

उत्तर संस्कृत भारत की प्राचीन भाषा है। ऋषि-मुनियों ने अपना ज्ञान-विज्ञान उसी भाषा में लिखा है। आज संस्कृत को समझने वाले वैज्ञानिक नहीं रहे, इसलिए समृद्ध ज्ञान की जानकारी नहीं है। आज वही ज्ञान हमें विदेशों से लेना पड़ रहा है, इसलिए भारत पिछड़ा हुआ माना जाता है।

प्रश्न.३ प्राचीन काल से विज्ञान उन्नत अवस्था में था इसके प्रमाण क्या हैं?

उत्तर
१. पुरी के पूज्य शंकराचार्य द्वारा वेद की पृष्ठभूमि से गणित के कुछ सूत्रों और उपसूत्रों को खोज कर वैदिक गणित द्वारा सभी प्रकार की गणना अत्यन्त सरल और शीघ्रता से की जा सकती है।
२. आर्यभट्ट द्वारा विक्रमी संवत् ५५६ (४९९ ई.सन्) में निकाला गया π 'पाई' का मान आज आधुनिक वैज्ञानिकों के खोजे गये मान के बराबर है।
३. शून्य की खोज तथा उसे दाशमिक प्रणाली गणना में दिया है।
४. पुष्पक विमान का वर्णन हम जानते हैं। महर्षि भरद्वाज के विमान शास्त्र के माध्यम से अत्यन्त उत्कृष्ट जानकारी दी गई है।
५. पाइथागोरस के १००० वर्ष पूर्व ही ऋषि बोधायन द्वारा वही प्रमेय सिद्ध की गई है।

प्रश्न.४ हमें विज्ञान का अध्ययन क्यों करना चाहिए?

उत्तर
१. वैज्ञानिक दृष्टिकोण निर्माण करना।
२. नए आविष्कारों एवं अन्वेषणों हेतु प्रेरणा प्राप्त करना।
३. प्रकृति की घटनाओं का वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन करना।
४. सभी के जीवन को सुगम, सरल और सुरक्षित बनाने में सहायता करना।
५. विश्व का कल्याण करना।
६. मनुष्य को स्वस्थ व दीर्घायु जीवन जीने की कला सिखाना।
७. प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा प्रदान करना।
८. विश्व में शान्ति स्थापना कर विकास की ओर उन्मुख करना।

भारतीय कालगणना

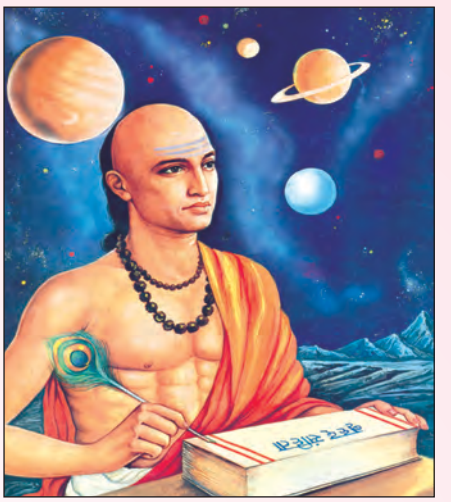

वराहमिहिर

काल का जितना व्यापक चिन्तन व अध्ययन भारतीय ऋषियों ने किया वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। आइए, उसका कुछ भाग हम यहां समझें –

काल के मुख्य दो भाग हैं – १. भूतकाल और २. भविष्यकाल।

भूतकाल का अर्थ है बीता हुआ समय। बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता।

भविष्यकाल का अर्थ है आने वाला समय। उसे अनागत कहते हैं।

भूतकाल एवं भविष्यकाल, दोनों के बीच वाले बिन्दु को वर्तमानकाल कहते हैं।

वर्तमानकाल निरन्तर चलता रहता है। उसकी गति भूतकाल की ओर होती है अर्थात् वर्तमानकाल निरन्तर भूतकाल में परिवर्तित होता रहता है।

समय का नाप –

दस वर्ष को दशाब्दी, सौ वर्ष को शताब्दी तथा हजार वर्ष को सहस्राब्दी कहते हैं। अब हम कालगणना की इकाई युग को जानेंगे –

१. (चार लाख बत्तीस हजार) ४,३२,००० वर्ष = १ कलियुग

(आठ लाख चौंसठ हजार) ८,६४,००० वर्ष = १ द्वापरयुग

(२ कलियुग = १ द्वापरयुग)

(बारह लाख छियानवे हजार) १२,९६,००० वर्ष = १ त्रेतायुग

(३ कलियुग = १ त्रेतायुग)

(सत्रह लाख अठाईस हजार) १७,२८,००० वर्ष = १ सत्ययुग

(४ कलियुग = १ सत्ययुग)

४३२ सहस्राब्दी = १ कलियुग २ कलियुग = १ द्वापरयुग

३ कलियुग = १ त्रेतायुग ४ कलियुग = १ सत्ययुग

अर्थात् कलियुग का दुगना द्वापर, कलियुग का तिगुना त्रेतायुग तथा कलियुग का चौगुना सत्ययुग होता है।

२. सत्ययुग + त्रेतायुग + द्वापरयुग + कलियुग = १ महायुग होता है और एक महायुग को चार युगों का समय होने से एक चतुर्युगी भी कहते हैं। अब आप गणना कर सकते हैं कि एक चतुर्युगी में कितने वर्ष होंगे?

१ चतुर्युगी = सत्ययुग के १७,२८,०००(सत्रह लाख अठाईस हजार) वर्ष + त्रेतायुग के १२,९६,००० (बारह लाख छियानवे हजार) वर्ष + द्वापरयुग के ८,६४,००० (आठ लाख चौंसठ हजार) वर्ष + कलियुग के ४,३२,००० (चार लाख बत्तीस हजार) वर्ष

= ४३,२०,००० (तैंतालीस लाख बीस हजार) वर्ष। अर्थात् १ चतुर्युगी ४३,२०,००० वर्ष की होती है। चतुर्युगी की अगली इकाई मन्वन्तर हम अगली कक्षा में जानेंगे।

संगीत की भारतीय परम्परा

संगीत का प्रभाव तो पशु-पक्षी और वनस्पतियाँ भी ग्रहण करती हैं फिर वे मनुष्य तो अभागे ही माने जाएँगे जिन्होंने कभी किसी प्रकार संगीत का आनन्द नहीं लिया।

देवर्षि नारद

लोक संगीत –

लोक संगीत, संगीत के तीन प्रकारों शास्त्रीय, सुगम और लोक में से एक है। सामान्य जन द्वारा संगीत का शास्त्रीय ज्ञान न होते हुए भी अपनी भाषा-बोली के गीत, अपनी ही बनाई स्वर-ताल-लय में गायी-बजायी जाती हैं तो वह लोक संगीत कहलाता है। इसमें स्वर या शब्द से भी अधिक प्रधान तत्त्व आनन्द होता है। लोकसंगीत शास्त्रीय या सुगम संगीत का बिगड़ा हुआ रूप नहीं है, बल्कि उसका अविकसित मूल रूप है। वास्तव में, इसके विपरीत शास्त्रीय व सुगम संगीत लोकसंगीत का ही परिष्कृत रूप हैं।

भगवान शिव, माता गौरी, ब्रह्मा, देवर्षि नारद, महर्षि तुम्बरु, मुनिराज मतंग से लेकर स्वामी हरिदास, बैजू बावरा, तानसेन, अष्टछाप के भक्तकवियों सूरदास आदि से होती हुई सन्त पुरन्दर दास, सन्त त्यागराज, मुथुस्वामी दीक्षितार, श्यामा शास्त्री, पण्डित विष्णुनारायण भातखण्डे, पण्डित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, कृष्णराव पण्डित, पण्डित भीमसेन जोशी, कुमार गन्धर्व, पण्डित ओंकारनाथ ठाकुर, लता मंगेशकर तक असंख्य नाम भारतीय संगीत परम्परा को युगों-युगों से समृद्ध करते रहे हैं। सभी के नाम उल्लेख करना यहाँ सम्भव नहीं है पर सभी की संगीत साधना प्रणम्य है।

१८ विद्याएँ और ६४ कलाएँ

मनुष्य द्वारा अपनी विभिन्न भावनाओं के अनुसार स्वयं की अनुभूतियों को प्रकट करने की प्रवृत्ति से विविध कलाओं का जन्म हुआ। मनुष्य ने अपने आसपास की स्थूल प्रकृति से अपने जीवन के लिए उपयोगी वस्तुओं को जैसी थी वैसी ही लेने की स्थिति से आगे चरण बढ़ाए। वह उन्हीं वस्तुओं को अपनी भावनाओं और आवश्यकताओं के अनुसार परिवर्तन कर उपयोग लाने लगा। यही कुशलताएँ उसने जीवन के सूक्ष्म जगत को अभिव्यक्त करने में भी उपयोग कीं, इस प्रकार कलाओं का निरन्तर विकास होता गया। यह क्रम आगे भी चलता रहेगा।

कलाओं ने मनुष्य को पशुओं से श्रेष्ठतम बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह की। यहाँ तक कि **'साहित्य संगीत कला विहीनः साक्षात् पशुःपुच्छ विषाणहीनः'** यानि साहित्य, संगीत, कला से विहीन मनुष्य बिना सींग-पूँछ का पशु माना जाने लगा। साहित्य व संगीत भी कला ही हैं लेकिन इनका इतना प्रसार हो गया कि ये विशेष रूप से उल्लेखनीय हो गईं।

चित्र बनाना, मूर्ति बनाना, संगीत आदि कुछ कुशलताओं को हम सामान्यरूप से कला के रूप में जानते हैं लेकिन कलाएँ असंख्य हैं। प्राचीन काल से कई कलाएँ आज भी चली आ रही हैं, कई के रूप बदलते रहे और कई नई कलाओं के रूप में स्थापित होती रहती हैं। नई कलाओं के विकास में विज्ञान का भी योगदान रहता है। विज्ञान मानव-मन की भावनाओं और कल्पनाओं को अभिव्यक्त करने के सरल साधन और समझ प्रदान करता है।

स्थापत्यकला

स्थापत्य कला या वास्तु विज्ञान –

इसका अर्थ है भवन निर्माण की कला या कारीगरी। स्थापत्य कला के जनक देवशिल्पी विश्वकर्मा जी माने जाते हैं। भारतीय स्थापत्य कला का सम्बन्ध सिन्धु घाटी की सभ्यता का अध्ययन करने पर प्रामाणिकता के साथ मिलता है। वास्तुविद्या भारतीय संस्कृति की विविधता को समझाने की कुंजी है जिसमें मनुष्यों को सुखी जीवन एवं सभी व्यवस्थाओं को सुचारु रूप से चलाने के लिए उनके निवास स्थान का स्वरूप कैसा हो, इसका ज्ञान दिया जाता है।

८३० विश्व प्रसिद्ध स्मारकों की सूची में हमारे देश का स्थान सर्वोच्च है। भारतीय संस्कृति के अनुसार देश के सभी धार्मिक स्थल स्थापत्य कला के अनूठे उदाहरण हैं।

आयुर्वेद

पुरातत्त्ववेत्ताओं के अनुसार संसार का प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद है। विभिन्न विद्वानों ने इसका रचना काल ५,००० से लाखों वर्ष पूर्व तक का माना है। ऋग्वेद में भी आयुर्वेद के अतिमहत्त्व के सिद्धान्तों का वर्णन मिलता है। चरक, सुश्रुत, कश्यप आदि मान्य ग्रन्थकार आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद मानते हैं। इससे आयुर्वेद की प्राचीनता सिद्ध होती है।

आयुर्वेदविद् - चरक

आयुर्वेद के इतिहास पर दृष्टि डालें तो इसमें वनस्पतियों, जड़ी-बूटियों और मसालों के प्रयोग से होने वाले स्वास्थ्य लाभ का विशेष उल्लेख मिलता है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने भी इससे होने वाले लाभों को स्वीकार किया है। अध्ययनों में पाया गया है कि आयुर्वेदिक सिद्धान्त पर आधारित औषधियाँ कई गम्भीर रोगों की हानि को कम कर सकती हैं। इतना ही नहीं, कुछ औषधियों को कैंसर जैसे गम्भीर और घातक रोगों से बचाने वाला भी माना जाता है। उदाहरणार्थ-

अदरक

अध्ययनों में अदरक को इसके एंटी-इंफ्लामेटरी और दर्द निवारक प्रभावों के लिए विशेष कारगर माना जाता रहा है। अदरक का सेवन मितली को सफलतापूर्वक ठीक करने में मदद कर सकता है। मॉर्निंग सिकनेस, सर्दी-जुकाम और गले की समस्याओं में भी इसके सेवन को लाभकारी पाया गया है। अदरक के एंटी-इंफ्लामेटरी गुण, कष्ट और सूजन को ठीक करने में मदद करते हैं।

मेथी –

मेथी के गुणों का आयुर्वेद में विशेष उल्लेख मिलता है। टेस्टोस्टेरोन हार्मोन के स्तर पर इसके प्रभाव देखे गए हैं। इसके अतिरिक्त रक्त शर्करा को नियंत्रित रखने में भी मेथी का सेवन करना विशेष लाभकारी है। अध्ययनकर्ताओं ने पाया कि इसमें प्लांट प्रोटीन ४- हाइड्रॉक्सीसोल्यूसीन होता है, जो इंसुलिन के स्तर में सुधार कर सकता है। प्रतिदिन मेथी के अर्क का सेवन रक्त शर्करा के स्तर को कम करने में विशेष लाभकारी है।

७. हमारा गौरवशाली अतीत

प्राचीन भारत के महान सम्राट

विकट वीरता, धीरता, शौर्य, पराक्रम, धर्म।
भारतीय सम्राट के राष्ट्र हितैषी कर्म॥

१. **चन्द्रगुप्त मौर्य** – चन्द्रगुप्त मौर्यवंश का संस्थापक था। अपने गुरु चाणक्य के मार्गदर्शन में चन्द्रगुप्त मौर्य ने ही पहली बार भारत में विशाल साम्राज्य की नींव डाली थी तथा अपना साम्राज्य भारत की सीमाओं के बाहर भी फैला दिया था। उसने यूनानी सेनापति सेल्यूकस को पराजित करके यूनानियों को सदैव के लिए भारत से बाहर निकाल दिया था। सेल्यूकस ने ही मैगस्थनीज नामक राजदूत को चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा था जिसने तत्कालीन भारत पर 'इण्डिका' नामक पुस्तक लिखकर गौरवशाली मौर्य साम्राज्य का वर्णन किया।

चन्द्रगुप्त

२. **सम्राट अशोक** – सम्राट अशोक चन्द्रगुप्त मौर्य का पौत्र और बिम्बसार का पुत्र था। शासन के प्रारम्भ में अशोक ने साम्राज्य विस्तार की नीति अपनायी। सम्पूर्ण भारतवर्ष के साथ-साथ उसका साम्राज्य पश्चिमोत्तर में हिन्दुकुश और ईरान की सीमाओं तक फैला था। कलिंग युद्ध में हुए भीषण रक्तपात को देखकर उसका हृदय द्रवित हो गया। भविष्य में उसने शस्त्र आधारित युद्ध नीति को छोड़कर धर्म विजय की नीति अपनायी। धर्म विजय के लिए उसने स्थान-स्थान पर प्रेरक शिलालेख लगवाए। विदेशों में धर्म प्रचार के लिए बौद्ध भिक्षुओं के साथ-साथ अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा। उसके लोककल्याणकारी कार्यों के कारण उसे आज भी विश्व का महानतम सम्राट माना जाता है।

३. **भास्करवर्मा** – ईसा की ७वीं शताब्दी में हुए राजा भास्करवर्मा की गिनती असम के महान राजाओं में की जाती है। वे वीर योद्धा होने के साथ-साथ कलाप्रेमी और कुशल प्रशासक भी थे। सम्राट हर्षवर्धन के साथ इनकी मैत्री सन्धि थी। वे आजीवन ब्रह्मचारी रहे।

गौरवशाली भारत

आइए, जानें भारतीय इतिहास के पन्नों से कुछ ऐसी बातें, जिनमें झलक मिलती है हमारे गौरवशाली भारत की।

१. महात्मा बुद्ध की सेवा में रहने वाले सम्राट बिम्बसार के राजवैद्य कौन थे? **(जीवक)**

२. सिकन्दर को पंजाब के किस राजा से भीषण युद्ध करना पड़ा था, जिसके बाद उसकी सेना ने आगे बढ़ने से मना कर दिया था? **(पौरस अथवा पुरू)**

३. अर्थशास्त्र पुस्तक किसके द्वारा लिखी गई? इसका सम्बन्ध किस विषय से है?
(आचार्य चाणक्य, राजनीति विषय)

४. पुष्यमित्र शुंग द्वारा किये गये दो अश्वमेध यज्ञों में उनके पुरोहित कौन थे? **(पतञ्जलि)**

५. अजन्ता और एलोरा की गुफाओं का निर्माण किन राजाओं ने करवाया था? **(सातवाहन)**

६. उत्कल प्रदेश के किस राजा ने यवन राजा दिमित्र को पराजित किया था? **(खारवेल)**

७. उज्जैन के किस राजा ने शकों को पराजित किया था? **(शकारि विक्रमादित्य)**

८. विक्रम सम्वत् कब प्रारम्भ हुआ? **(युगाब्द ३०४५ में)**

९. कनिष्क ने ७८ ई॰ में जो नया संवत् चलाया उसे क्या कहते हैं? **(शक संवत्)**

१०. अश्वघोष, चरक और नागार्जुन किस राजा के दरबार में रहते थे? **(कनिष्क)**

वन्देमातरम् की गौरव गाथा

'वन्दे मातरम्' विगत अनेक वर्षों से देश-भक्तों को स्वाधीनता संग्राम में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध अपनी लड़ाई में अमानुषिक अत्याचारों को सहते हुए अपना सर्वस्व, यहाँ तक कि प्राणों का भी बलिदान देने के लिए प्रेरित करता आया है। हमारे राष्ट्रीय संग्राम का यह जीवन्त एवं अविच्छेद्य अंग है और हमारी श्रद्धा एवं प्रेम का पूर्ण अधिकारी है।

वन्देमातरम् की जन्मकथा –

वन्देमातरम् का जन्म कब और कैसे हुआ, इसकी दो-तीन कथाएँ प्रचलित हैं। उनमें सर्वमान्य है कि सन् १८७५ की दुर्गापूजा की छुट्टियों के दिन थे। बंकिमचन्द्र अपने गाँव काटालपाडा जा रहे थे। देखते-देखते कवि हृदय भारत माँ के दर्शन से अभिभूत हो उठा। भौतिक विश्व का विस्मरण हुआ और उनका व्यक्तित्व माँ के इस अद्‌भुत रूप से एकाकार हो गया। इस भावविभोर अवस्था में सिंहवाहिनी, त्रिशूलधारिणी, सुवर्णकिरीटिनी माँ का रूप उन्हें दृष्टिगोचर हुआ। इस दर्शन से उनका रोम-रोम पुलकित हो उठा और भावनाओं ने शब्दरूप लिया।

बंकिमचन्द्र

वन्दे मातरम्! सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शुभ्र-ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्

इस प्रकार मन्त्र के समान महिमा व तपोसाधना से पवित्र 'वन्देमातरम्' गीत का जन्म हुआ।

दूसरी मान्यता यह है कि 'बंगदर्शन' पत्रिका में रिक्त स्थान की पूर्ति करने के लिये बंकिमचन्द्र जी ने यह गीत लिख कर दिया। प्रथम स्वतन्त्र रूप से और तत्पश्चात 'आनन्दमठ' उपन्यास के अंग के रूप में यह गीत संसार के सामने आया। सर्वप्रथम इस गीत एवं उपन्यास को धारावाहिक रूप में प्रकाशित करने का सम्मान 'बंगदर्शन' ने प्राप्त किया।

वन्देमातरम् गीत के समय जो संकल्पना बंकिमचन्द्र जी के मन में जाग उठी थी, उसी की भावात्मक अभिव्यक्ति है 'आनन्दमठ'। 'वन्देमातरम्' शब्द, वह सम्पूर्ण गीत और आनन्दमठ का कथानक के त्रिदल के रूप में आन्तरिक सम्बन्ध माँ के भक्तिसूत्र से जुड़े हुए हैं।

'वन्देमातरम्' शब्द की संकल्पना में जो भाव है वह गीत में प्रस्फुटित हुआ है। बंकिमचन्द्रजी की औपन्यासिक प्रतिभा ने यह काम सरलता से कर दिया। 'आनन्दमठ' में वन्देमातरम् सन्तानों का पवित्र मन्त्र बन गया।

जिस ढंग से 'आनन्दमठ' में इस गीत का उपयोग किया है उससे उनकी कलात्मक सूझबूझ का पता चलता है। उपन्यास के पात्र भवानन्द, महेन्द्र आदि के चरित्र अत्यन्त समर्थ और जीवन्त हैं। पढ़ते-पढ़ते मन पुलकित होता है, स्मित होता है - वीररस का विद्युतप्रवाह धमनियों में दौड़ने लगता है।

शंख के संघोष का संदेश वन्दे मातरम्।
राष्ट्रभक्ति प्रेरणा का गान वन्दे मातरम्।।

हम पर थोपे गये युद्ध

भारत-पाक युद्ध (१९४७)

मेजर सोमनाथ शर्मा

वर्षों की परतन्त्रता के बाद लम्बे संघर्षों के कारण १५ अगस्त १९४७ को हमारा देश अंग्रेजों की दासता से मुक्त हो गया। यह स्वतन्त्रता हमारे लिये पूर्ण सन्तोषकारक नहीं थी। अंग्रेजों की कूटनीतिक चाल और मुस्लिम लीग (जिन्ना) की हठधर्मिता के कारण देश स्वतन्त्र होते-होते दो भागों में बँट गया। यह खण्डित स्वतंत्रता थी। बटवारे के बाद भी पाकिस्तान की बुरी दृष्टि कश्मीर के स्वतन्त्र भू-भाग पर थी, क्योंकि कश्मीर के राजा हरि सिंह ने भारत के साथ मिलने के स्थान पर स्वतन्त्र रहना स्वीकार किया था। इसका लाभ उठाकर पाकिस्तान ने अपनी सेना को कबाइलियों के वेश में कश्मीर में प्रवेश कराकर कब्जा करने का प्रयास किया। कश्मीर पर संकट आया देख महाराजा हरि सिंह ने भारत में विलय के सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किये। फलतः तत्कालीन गृहमंत्री सरदार पटेल ने भारतीय सेना को कश्मीर भेजा। भारतीय सेना ने पराक्रम का परिचय देते हुये पाकिस्तानी सेना को कश्मीर घाटी से खदेड़ कर पाकिस्तान की ओर बढ़ना आरम्भ किया। तत्कालीन प्रधानमन्त्री ने ३० दिसम्बर १९४७ में यह मामला संयुक्त राष्ट्रसंघ की सुरक्षा परिषद् के सामने रखा। सुरक्षा परिषद् ने ३१ दिसम्बर १९४७ से दोनों देशों की सेनाओं को यथास्थिति बनाये रखने का आदेश दिया। इस आदेश के कारण ८४,१०७ वर्ग किलोमीटर भूमि को कश्मीर से मुक्त कराना शेष रह गया। यह हिस्सा आज भी पाकिस्तान के कब्जे में है जहाँ से आतंकवादियों की अवैध घुसपैठ के कारण हजारों लोगों के जानमाल की क्षति हुई है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये -

प्रश्न १ किस सन् में हमारा देश अंग्रेजों की दासता से मुक्त हुआ?

प्रश्न २ हमारी कितने वर्ग किलोमीटर भूमि आज भी पाकिस्तान के कब्जे में है?

प्रश्न ३ ३१ दिसंबर १९४९ को दोनों देशों को यथास्थिति बनाए रखने का आदेश किसने दिया?

हमारे बालवीर

कुम्भाराम मीणा

राजस्थान राज्य में करौली नाम का एक जिला है। इस जिले की हिण्डौन तहसील से मात्र तीन किलोमीटर दूरी पर सिकरौदा जाट एक छोटासा गाँव है। कुम्भाराम मीणा के पिता श्री इन्द्र राज मीणा इसी गाँव के निवासी है।

२७ सितम्बर १९९९ को कुम्भा मीणा जिसकी उम्र पन्द्रह वर्ष की थी, प्रतिदिन की भाँति अपने विद्यालय जा रहा था। हिन्डौन से महावीर जी कस्बे की ओर जाने वाली उस रेलवे लाइन को पार करते समय उसकी दृष्टि अचानक रेलमार्ग की ओर गयी तो उसने देखा कि रेलमार्ग का कुछ हिस्सा टूटा हुआ है। वह सोचने लगा कि इस मार्ग पर तो बहुतसी रेलगाड़ियाँ चलती हैं, अभी कोई रेलगाड़ी इस पटरी पर आ गयी तो बड़ी दुर्घटना हो सकती है। वह महावीर जी स्टेशन की दिशा में तेजी से भागा और केबिन के पास पहुँचकर हाँफते हुए कुम्भाराम मीणा ने चिल्ला कर केबिनमैन को आवाज दी। टूटते शब्दों में वह बोला ''काका! आने वाली गाड़ी रोक दो। मार्ग पर आने-जाने वाली हर गाड़ी को रुकवा दो क्योंकि आगे रेल की पटरी टूटी हुई है।''

केबिनमैन ने ध्यान दिया और तुरन्त महावीरजी स्टेशन के स्टेशन मास्टर से सम्पर्क कर उन्हें कुम्भाराम मीणा की दी हुई सूचना से अवगत कराया। कुछ देर में ही इस ट्रैक पर मुम्बई-दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस आने वाली थी। स्टेशन मास्टर ने तकनीकी कर्मचारियों को बतायी गयी जगह पर भेजकर सिग्नल को डाउन करवा दिया। इस प्रकार राजधानी एक्सप्रेस दुर्घटना से बच गयी।

२००१ के गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर कुम्भाराम मीणा को 'राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार' प्रधानमंत्री जी के द्वारा प्रदान किया गया। २७ सितम्बर १९९९ की उस तीन किलोमीटर की दौड़ ने साहसी कुम्भाराम मीणा को देश की राजधानी के राजपथ पर पहुँचा दिया।

ऐसे साहसी वीर बालक-बालिकाओं की हमारे देश में कोई कमी नहीं है जैसे –

क. **सीताराम और ढोंडी सन्तू** – महाराष्ट्र के सांगली जिले के मंगरोल गाँव के निवासी १२ वर्ष की अल्पायु के बालक थे, जिन्होंने अपने गाँववासियों को फिरंगी पुलिस के अत्याचारों से बचाने के लिए स्वयं को बलिदान कर दिया।

ख. **बच्चनप्रसाद, छठू गिरि और झगरूसाह** – बिहार के सीवान जिले में १९४२ के आन्दोलन के समय सीवान के न्यायालय पर तिरंगा फहराते समय पुलिस से जूझते हुए मात्र १२ वर्ष की आयु में शहीद हो गये।

घ. **कालीबाई** – राजस्थान के डूँगरपुर जिले की एक १३ वर्षीय बालिका, जिसने अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष करते हुए अपने विद्यालय के दो अध्यापकों नाना भाईजी और सेंगा भाईजी को अंग्रेजों के कब्जे से छुड़ाते हुए अपने जीवन की बलि चढ़ा दी।

ङ. **बाजी राउत** – ओडिशा के नीलकण्ठपुर गाँव का १३ वर्षीय बालक जिसने अंग्रेज सिपाहियों को अपने पिता की नाव पर नदी पार कराने से इन्कार कर दिया और अंग्रेज सिपाहियों की क्रूरता का शिकार हो गया।

संस्कृति अपना स्वाभिमान है, इसको सदा बढ़ायेंगे।
स्वयं आचरण कर संस्कृतिमय हम समाज कर पायेंगे।।

निवेदन

प्रिय भैया-बहिनों से ...

यह पुस्तक तो आपने पूरी पढ़ ली। पुस्तक केवल पढ़ने और संभाल कर रख लेने के लिए तो नहीं होती आगे विचार करने के लिए यदि हमने उसमें से कुछ नहीं निकाला तो पुस्तक की उपयोगिता क्या हुई? इसलिए, कुछ बातें आपके सोचने एवं करने के लिए ...

यह तो छोटी-सी पुस्तक है। कितना भी बड़ा ग्रन्थ क्यों न हो, उसमें भी विषयवस्तु की सीमा तो रहती ही है। उस पर संस्कृति जैसा व्यापक विषय कुछ पृष्ठों की मर्यादा में कैसे समा सकता है? इसलिए सबसे पहले तो अपने ध्यान में यह आना चाहिए कि यह पुस्तक संस्कृति के कुछ प्रमुख अंगों का परिचय मात्र है, सम्पूर्ण संस्कृति बोध नहीं। कुछ जानकारियाँ एवं तथ्य आपके ध्यान में आ गए, अब उनके विस्तार में जाने का काम तो आपको ही करना है – स्वाध्याय द्वारा, चर्चा द्वारा, चिंतन द्वारा।

दो शब्द प्रयोग में आते हैं – सभ्यता और संस्कृति। प्राय: दोनों को पर्यायवाची समझा जाता है, जबकि दोनों में अनेक अन्तर हैं। सभ्यताएँ बदलती हैं, बनती-बिगड़ती हैं। संस्कृति का आधार स्थायी तथा शाश्वत होता है। सड़क बनाने की एक प्रक्रिया होती है – नाप-जोख की जाती है, निर्माण सामग्री आती है, सरकार या नगर पालिका धन देती है और अभियन्ताओं के मार्गदर्शन-निरीक्षण में श्रमिक सड़क बनाते हैं। इसके विपरीत गाँव में खेतों के बीच से होकर मन्दिर या तालाब तक जाने वाली पगडण्डी कोई बनाता नहीं, चलने वालों के पैरों से स्वयं बन जाती है। सभ्यता सड़क है, संस्कृति पगडण्डी जोकि उसका पालन करने वालों ने स्वयं बना ली है। इसमें सभ्यता का भी अंश होता है, किन्तु पर्व-त्योहार, रीति-रिवाज-परम्पराओं, मान बिन्दुओं-श्रद्धा केन्द्रों के प्रति समान आस्था समाज को एकजुट करती है। गंगा उत्तर भारत में बहती है किन्तु सुदूर दक्षिण भारत ही नहीं बल्कि विदेशों में भी जा बसे भारतीय मूल के समाज के लिए श्रद्धा का केन्द्र है। संस्कृति का आधार भावात्मक एकात्मता है जो हमें एक-दूसरे से जोड़कर रखती है। कविवर सुमित्रानन्दन पंत अपनी कविता 'आस्था' में लिखते हैं – "प्रखर बुद्धि से भले सभ्यता हो नव निर्मित, संस्कृति के निर्माण के लिए हृदय चाहिए।"

प्रसिद्ध साहित्यकार प्रो॰ किशोरीदास वाजपेयी कहते हैं, "संस्कृति संस्कार से बनती है जबकि सभ्यता नागरिकता का रूप है।"

अत: अपने लिए विचार करने का दूसरा विषय है, क्या हम सभ्यता और संस्कृति को अलग-अलग ठीक प्रकार से समझते हैं।

आजकल मंच पर होने वाली प्रस्तुतियों – नृत्य, नाट्य, गायन-वादन, अभिनय को 'सांस्कृतिक कार्यक्रम' कहा जाता है। यदि उनमें अपने देश की संस्कृति की झलक नहीं है तो वे रंगमंचीय प्रस्तुतियाँ मात्र हैं, सांस्कृतिक कार्यक्रम तो नहीं।

वीर सावरकर लिखते हैं, ''विश्व रचना परमात्मा द्वारा सम्पन्न हुई है। संस्कृति मानव प्रकृति द्वारा की गई उसकी अनुकृति मात्र है। संस्कृति का सर्वोत्तम रूप प्रकृति और मानव पर मानव की आत्मा की पूर्ण-विजय प्राप्ति ही है।'' अर्थात् अपनी संस्कृति की मूलभूत विशेषताओं को समझकर और उन्हें जीवन व्यवहार में लाकर हम एक प्रकार से परमात्मा के कार्य का अनुकरण ही कर रहे होते हैं।

देशभर के अनेक विद्वानों ने इस पुस्तक में अत्यन्त परिश्रमपूर्वक जो जानकारी संकलित कर हमारे हाथों में सौंपी है, वह केवल रट लेने और परीक्षा में अच्छे अंक लाने के लिए नहीं है। हम इस सूत्र रूप में प्राप्त जानकारियों के आधार पर इस दिशा में और अधिक खोजें-जानें-समझें-समझायें, तभी इस श्रम की सफलता होगी। ज्ञानदायिनी माता सरस्वती हमें ऐसी सामर्थ्य प्रदान करें, यही प्रार्थना।

– महामंत्री

प्रकाशक :

विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान

संस्कृति भवन, सलारपुर रोड, कुरुक्षेत्र-136118 (हरियाणा)

दूरभाष : ०१७४४-२५१९०३, २७०५१५ मोबाइल/व्हाट्सएप्प : ९८१२५२०३०१

sgp@samskritisansthan.org www.samskritisansthan.com vidyabhartikurukshetra vidyabhartisss YouTube vbsss kkr

प्रकाशन वर्ष : विक्रम संवत् २०८१, युगाब्द ५१२६ (सन् 2024 ई॰)